AASHIQE AKBAR (HINDI)

आ़शिक़े अक्बर

(सीरते सिद्दीक़े अक्बर के चन्द गोशे)

- बचपन की हैरत अंगेज़ हि़कायत 2
- ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ का मुख़्तसर तआ़रुफ़ 3
- सब से पहले कौन ईमान लाया ? 5
- सिद्दीक़े अक्बर की शान और क़ुरआन 17
- सिद्दीक़े अक्बर ने म-दनी ओपरेशन फ़रमाया 57
- ज़ुल्फ़ें और सर के बालों वग़ैरा के 22 म-दनी फूल 60
- मन्क़बते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर 64

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी

مكتبة المدينة (دعوت اسلامی)

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين
اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये ان شاء الله عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اللهم افتح علينا حكمتك وانشر
علينا رحمتك يا ذا الجلال والاكرام

तरजमा : ***ऐ अल्लाह*** عزوجل ***! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुजु़र्गी वाले*** (المستطرف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

आ़शिके़ अक्बर

येह रिसाला (**आ़शिके़ अक्बर**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात,

MO. 9374031409

E-mail : translaionmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

आशिके अक्बर [1]

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (64 सफ़हात) अव्वल ता आख़िर पढ़ लीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब व मा'लूमात के साथ साथ दौलते इश्क़ का ढेरों ढेर ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

हर क़तरे से फ़िरिश्ता पैदा होता है

मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक फ़िरिश्ता है कि उस का बाज़ू मशरिक़ में है और दूसरा मग़रिब में । जब कोई शख़्स मुझ पर महब्बत के साथ दुरूद भेजता है वोह फ़िरिश्ता पानी में ग़ोता खा कर अपने पर झाड़ता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के परों से टपकने वाले हर हर क़तरे से एक एक फ़िरिश्ता पैदा करता है वोह **फ़िरिश्ते क़ियामत तक उस दुरूद पढ़ने वाले के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं** ।

(اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص ۲۵۱، الکلام الاوضح فی تفسیر الم نشرح، ص۲۴۲،۲۲۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के अव्वलीन म-दनी मर्कज़ जामेअ़ मस्जिद गुलज़ारे हबीब में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (अन्दाज़न 3 र-मज़ानुल मुबारक सि.1410 हि./29-03-90) में फ़रमाया था । तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तहरीरन हाज़िरे ख़िदमत है ।

मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

बचपन की ह़ैरत अंगेज़ ह़िकायत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत** (4 ह़िस्से)" सफ़ह़ा 60 ता 61 पर है : **सिद्दीके़ अक्बर** رضی اللہ تعالٰی عنہ ने कभी बुत को **सज्दा** न किया। चन्द बरस की उ़म्र में आप (رضی اللہ تعالٰی عنہ) के बाप बुतख़ाने में ले गए और कहा : येह हैं तुम्हारे बुलन्दो बाला ख़ुदा, इन्हें सज्दा करो। **जब** आप (رضی اللہ تعالٰی عنہ) बुत के सामने तशरीफ़ ले गए, फ़रमाया : "मैं भूका हूं मुझे खाना दे, मैं नंगा हूं मुझे कपड़ा दे, मैं पथ्थर मारता हूं अगर तू ख़ुदा है तो अपने आप को बचा।" वोह बुत भला क्या जवाब देता। आप (رضی اللہ تعالٰی عنہ) ने एक पथ्थर उस के मारा जिस के लगते ही वोह गिर पड़ा और कु़व्वते ख़ुदादाद की ताब न ला सका। बाप ने येह ह़ालत देखी उन्हें गुस्सा आया, उन्हों ने एक थप्पड़ रुख़्सारे मुबारक पर मारा, और वहां से आप (رضی اللہ تعالٰی عنہ) की मां के पास लाए, सारा वाक़िआ़ बयान किया। मां ने कहा : इसे इस के ह़ाल पर छोड़ दो जब येह पैदा हुवा था तो ग़ैब से आवाज़ आई थी कि

يَـا اَمَةَ اللّٰـهِ عَـلَى التَّحْقِيْقِ
اَبْشِـرِىْ بِالْوَلَدِ الْعَتِيْقِ اِسْمُهٗ
فِى السَّمَـاءِ الصِّدِّيْقُ لِمُحَمَّدٍ
صَاحِبٌ وَّ رَفِيْقٌ

ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की सच्ची बन्दी ! तुझे ख़ुश ख़बरी हो येह बच्चा अ़तीक़ है, आस्मानों में इस का नाम सिद्दीक़ है, मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साह़िब और रफ़ीक़ है।

येह रिवायत सिद्दीके़ अक्बर (رضی اللہ تعالٰی عنہ) ने ख़ुद मजलिसे अक़्दस (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) में बयान की। जब येह बयान कर चुके, जिब्रीले अमीन (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ह़ाज़िरे बारगाह हुए और अ़र्ज़ की :

صَدَقَ اَبُوبَكْرٍ وَّهُوَ الصِّدِّيْقُ

अबू बक्र ने सच कहा और वोह सिद्दीक़ हैं।

येह ह़दीस इमाम अह़मद क़स्त़लानी (قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی) ने शर्हे़ सह़ीह़ बुख़ारी में ज़िक्र की।

(ارشاد الساری شرح صحیح بخاری ج۸ص ۳۷۰، ملفوظات اعلی حضرت ص ۶۰،۶۱ بِتَصَرُّف)

सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर का मुख़्तसर तआ़रुफ़

ख़लीफ़ए अव्वल, जा नशीने मह़बूबे रब्बे क़दीर, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ का नामे नामी इस्मे गिरामी **अ़ब्दुल्लाह** आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की कुन्यत **अबू बक्र** और **सिद्दीक़ व अ़तीक़** आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के अल्क़ाब हैं। سُبْحٰنَ اللہ ! **सिद्दीक़** का मा'ना है : ''बहुत ज़ियादा सच बोलने वाला।'' आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ज़मानए जाहिलिय्यत ही में इस लक़ब से मुलक़्क़ब हो गए थे क्यूं कि हमेशा ही सच बोलते थे और **अ़तीक़** का मा'ना है : ''आज़ाद'' । सरकारे आ़ली मर्तबत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को बिशारत देते हुए फ़रमाया : ''اَنْتَ عَتِيْقٌ مِّنَ النَّارِ या'नी तू नारे दोज़ख़ से आज़ाद है।'' इस लिये आप رضی اللہ تعالٰی عنہ का येह लक़ब हुवा। (तारीख़ुल ख़ु-लफ़ा स. 29) आप رضی اللہ تعالٰی عنہ **क़ुरैशी** हैं और सातवीं पुश्त में श-ज-रए नसब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **ख़ानदानी श-जरे** से मिल जाता है।

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ आ़मुल फ़ील[1] के तक़्रीबन अढ़ाई बरस के बा'द मक्कतुल मुकर्रमा زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً में पैदा हुए । अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ वोह सह़ाबी हैं जिन्हों ने सब से पहले ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **रिसालत की तस्दीक़** की । आप رضی اللہ تعالٰی عنہ इस क़दर जामिउ़ल कमालात और मज्मउ़ल फ़ज़ाइल हैं कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के बा'द अगले और पिछले तमाम इन्सानों में सब से अफ़्ज़लो आ'ला हैं । **आज़ाद मर्दों में सब से पहले इस्लाम क़बूल किया** और तमाम जिहादों में मुजा-हदाना कारनामों के साथ शरीक हुए और सुल्ह़ व जंग के तमाम फै़सलों में मह़बूबे रब्बे क़दीर, साह़िबे ख़ैरे कसीर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वज़ीर व मुशीर बन कर, ज़िन्दगी के हर मोड़ पर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साथ दे कर जां निसारी व वफ़ादारी का ह़क़ अदा किया । 2 साल 7 माह मस्नदे ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ रह कर 22 जुमादल उख़रा सि. 13 हि. पीर शरीफ़ का दिन गुज़ार कर वफ़ात पाई । **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ नें नमाजे़ जनाज़ा पढ़ाई और रौज़ए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفاً وَّتَکرِیْماً में हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के **पहलूए मुक़द्दस** में दफ़्न हुए ।

(الاکمال فی اسماء الرجال ص۵۸۷،تارِیخُ الْخُلَفاء ص۲۷-۶۲باب المدینہ کراچی)

1 या'नी जिस साल ना मुराद व ना हन्जार अब-रहा बादशाह हाथियों के लश्कर के हमराह का'बए मुशर्रफ़ा पर ह़म्ला आवर हुवा था । इस वाक़िए की तफ़सील जानने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब ''अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन'' का मुत़ा-लआ़ कीजिये ।

सब से पहले कौन ईमान लाया ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 92 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**सवानेहे़ करबला**" सफ़ह़ा 37 पर है : अगर्चे सह़ाबए किराम व ताबिईन वगै़रहुम की कसीर जमाअ़तों ने इस पर ज़ोर दिया है कि "सिद्दीके़ अक्बर" सब से पहले मोमिन हैं। मगर बा'ज़ ह़ज़रात ने येह भी फ़रमाया कि सब से पहले मोमिन "ह़ज़रते अ़ली" हैं। बा'ज़ ने येह कहा कि "ह़ज़रते ख़दीजा" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सब से पहले ईमान से मुशर्रफ़ हुईं। इन अक़्वाल में ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम, इमामुल अइम्मा, सिराजुल उम्मह ह़ज़रते इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इस त़रह़ तत़्बीक़ (या'नी मुवा-फ़क़त) दी है कि मर्दों में सब से पहले ह़ज़रते अबू बक्र मुशर्रफ़ ब ईमान हुए और औ़रतों में ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन **ख़दीजा** और नौ उ़म्र साहि़ब ज़ादों में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم اَجْمَعِیْن।

(تارِیخُ الْخُلَفاء لِلسُّیُوطی ص٢٦)

सब से अफ़्ज़ल कौन ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 92 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**सवानेहे़ करबला**" सफ़ह़ा 38 ता 39 पर है : अहले सुन्नत का इस पर इज्माअ़ है कि अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द तमाम आ़लम से अफ़्ज़ल ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ हैं, उन के बा'द ह़ज़रते उ़मर, उन के बा'द ह़ज़रते उ़स्मान, उन के बा'द ह़ज़रते अ़ली, उन के बा'द तमाम अ़-श-रए मुबश्शरा, उन के बा'द बाक़ी अहले बद्र, उन के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

बा'द बाक़ी अहले उहुद, उन के बा'द बाक़ी अहले बैअ़ते रिज़्वान, फिर तमाम सह़ाबा। येह इज्माअ़ अबी मन्सूर बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِیْ ने नक़्ल किया है। इब्ने अ़साकिर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَادِر ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत की, फ़रमाया कि हम अबू बक्र व उ़मर व उ़स्मान व अ़ली को फ़ज़ीलत देते थे बह़ाले कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम में तशरीफ़ फ़रमा हैं। (इब्ने अ़साकिर जि. 30 स. 346) इमाम अह़मद علیہ رحمۃ اللہ الاحد वग़ैरा ने ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से रिवायत किया कि आप کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया कि इस उम्मत में नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द सब से बेहतर अबू बक्र व उ़मर हैं। رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا (ऐज़न स. 351) ज़हबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने कहा कि येह ह़ज़रते अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہ से ब तवातुर मन्क़ूल है। (تارِیخُ الْخُلَفاء لِلسُّیُوطی ص ٣٤)

तो मैं इल्ज़ाम तराशों वाली सज़ा दूंगा

इब्ने अ़साकिर (علیہ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقادر) ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला (رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) से रिवायत की, कि ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : जो मुझे ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर से अफ़्ज़ल कहेगा तो मैं उस को मुफ़्तरी की (या'नी इल्ज़ाम लगाने वाले को दी जाने वाली) सज़ा दूंगा।

(تاریخ دمشق لابن عساکِر ج ٣٠ ص ٣٨٣ دارالفکر بیروت)

कलामे ह़सन

बरादरे आ'ला ह़ज़रत, उस्ताज़े ज़मन, ह़ज़रते मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان अपने मज्मूअ़ए कलाम "**ज़ौक़े ना'त**" में अफ़्ज़लुल ब-शरे बा'दल अम्बियाअ, मह़बूबे ह़बीबे ख़ुदा, साह़िबे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (کنز العمال)

सिद्क़ो सफ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ बिन अबू क़ुह़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا की शाने सदाक़त निशान में यूं रत़्बुल्लिसान हैं :

बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का — है यारे ग़ार, मह़बूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

इलाही ! रह़्म फ़रमा ! ख़ादिमे सिद्दीक़े अक्बर हूं — तेरी रह़मत के सदक़े, वासित़ा सिद्दीक़े अक्बर का

रुसुल और अम्बिया के बा'द जो अफ़्ज़ल हो आ़लम से — येह आ़लम में है किस का मर्तबा, सिद्दीक़े अक्बर का

गदा सिद्दीक़े अक्बर का, ख़ुदा से फ़ज़्ल पाता है — ख़ुदा के फ़ज़्ल से हूं मैं गदा, सिद्दीक़े अक्बर का

ज़ईफ़ी में येह क़ुव्वत है ज़ईफ़ों को क़वी कर दें — सहारा लें ज़ईफ़ व अक़्विया सिद्दीक़े अक्बर का

हुए फ़ारूक़ो उ़स्मानो अ़ली जब दाख़िले बैअ़त — बना फ़ख़्रे सलासिल सिल्सिला सिद्दीक़े अक्बर का

मक़ामे ख़्वाबे राह़त चैन से आराम करने को — बना पहलूए मह़बूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

अ़ली हैं उस के दुश्मन और वोह दुश्मन अ़ली का है — जो दुश्मन अ़क़्ल का दुश्मन हुवा सिद्दीक़े अक्बर का

लुटाया राहे ह़क़ में घर कई बार इस मह़ब्बत से

कि लुट लुट कर ह़सन घर बन गया सिद्दीक़े अक्बर का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

माल व जान आक़ाए दो जहां पर क़ुरबान

साहि़बे मरविय्याते कसीरा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि रह़मते आ़-लमियान, मक्की म-दनी सुल्त़ान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान

है : '' مَا نَفَعَنِیْ مَالٌ قَطُّ مَا نَفَعَنِیْ مَالُ اَبِیْ بَکْرٍ या'नी मूझे कभी किसी के माल ने वोह फ़ाएदा न दिया जो अबू बक्र के माल ने दिया।'' बारगाहे नुबुव्वत से येह बिशारत सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र (رضی اللہ تعالٰی عنہ) रो दिये और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे और मेरे माल के मालिक आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही तो हैं।

(سُنَنِ اِبن ماجه ج١ ص٧٢ حديث ٩٤ دارالمعرفة بيروت)

वोही आंख उन का जो मुंह तके, वोही लब कि मह़्व हों ना'त के
वोही सर जो उन के लिये झुके, वोही दिल जो उन पे निसार है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायते मुबा-रका से मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ का मुबारक अ़क़ीदा भी येही था कि हम मह़बूबे रब्बुल अनाम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के गु़लाम हैं और गु़लाम के तमाम माल व मनाल का मालिक उस का आक़ा ही होता है, हम गु़लामों का तो अपना है ही क्या ?

क्या पेश करें जानां क्या चीज़ हमारी है
येह दिल भी तुम्हारा है येह जां भी तुम्हारी है

करूं तेरे नाम पे जां फ़िदा

इब्तिदाए इस्लाम में जो शख़्स मुसल्मान होता वोह अपने इस्लाम को ह़त्तल वस्अ़ (जहां तक मुम्किन होता) मख़्फ़ी रखता कि हु़ज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, ग़म ख़्वारे उमम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

की त़रफ़ से भी येही हुक्म था ताकि काफ़िरों की त़रफ़ से पहुंचने वाली तक्लीफ़ और नुक़्सान से मह़फ़ूज़ रहें। जब **मुसल्मान मर्दों की ता'दाद 38 हो गई** तो ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने बारगाहे रसूले अन्वर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अब अ़लल ए'लान तब्लीग़े इस्लाम की इजाज़त इनायत फ़रमा दीजिये। दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, उम्मत के ग़म ख़्वार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अव्वलन इन्कार फ़रमाया मगर फिर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के इस्रार पर **इजाज़त** इनायत फ़रमा दी। चुनान्चे सब मुसल्मानों को ले कर **मस्जिदुल ह़राम शरीफ़** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً में तशरीफ़ ले गए और **ख़त़ीबे अव्वल** ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ख़ुत़्बे का आग़ाज़ किया, ख़ुत़्बा शुरूअ़ होते ही कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन चारों त़रफ़ से मुसल्मानों पर टूट पड़े। मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً में आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की अ़-ज़मत व शराफ़त मुसल्लम थी, इस के बा वुजूद कुफ़्फ़ारे बद अत़वार ने आप رضی اللہ تعالٰی عنہ पर भी इस क़दर ख़ूनी वार किये कि चेह्रए मुबारक लहू लुहान हो गया ह़त्ता कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ बेहोश हो गए। जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के क़बीले के लोगों को ख़बर हुई तो वोह आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को वहां से उठा कर लाए। लोगों ने गुमान किया कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ज़िन्दा न बच सकेंगे। शाम को जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को इफ़ाक़ा हुवा और होश में आए तो सब से पहले येह अल्फ़ाज़ ज़बाने सदाक़त निशान पर जारी हुए : **मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **का क्या ह़ाल है ?**

लोगों की त़रफ़ से इस पर बहुत मलामत हुई कि उन का साथ देने की वजह से ही येह मुसीबत आई, फिर भी उन्हीं का नाम ले रहे हो।

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की **वालिदए माजिदा उम्मुल ख़ैर** खाना ले आईं मगर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की एक ही सदा थी कि शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क्या ह़ाल है ? वालिदए मोह़तरमा ने ला इ़ल्मी का इज़्हार किया तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ की बहन) से दरयाफ़्त कीजिये, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की वालिदए माजिदा अपने लख़्ते जिगर की इस मज़्लूमाना ह़ालत में की गई बे ताबाना दर-ख़्वास्त पूरी करने के लिये ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास गईं और सरवरे मा'सूम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़ाल मा'लूम किया। वोह भी ना मुसाइद ह़ालात के सबब उस वक़्त अपना इस्लाम छुपाए हुए थीं और चूंकि **उम्मुल ख़ैर** अभी तक मुसल्मान न हुई थीं लिहाज़ा अन्जान बनते हुए फ़रमाने लगीं : मैं क्या जानूं कौन मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और कौन अबू बक्र (رضی اللہ تعالٰی عنہ)। हां आप के बेटे की ह़ालत सुन कर रन्ज हुवा, अगर आप कहें तो मैं चल कर उन की ह़ालत देख लूं। **उम्मुल ख़ैर** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अपने घर ले आईं। उन्हों ने जब ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की ह़ालते ज़ार देखी तो **तह़म्मुल** (या'नी बरदाश्त) न कर सकीं, रोना शुरूअ़ कर दिया। **ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर** رضی اللہ تعالٰی عنہ ने पूछा : मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ैर ख़बर दीजिये। ह़ज़रते

सय्यि-दतुना उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने वालिदए साहिबा की त़रफ़ इशारा करते हुए तवज्जोह दिलाई। आप رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि इन से ख़ौफ़ न कीजिये, तब उन्हों ने अ़र्ज़ की : नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इनायत से ब ख़ैरो आ़फ़िय्यत हैं और **दारे अरक़म** या'नी ह़ज़रते **सय्यिदुना अरक़म** رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ के घर तशरीफ़ फ़रमा हैं। आप رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस वक़्त तक कोई चीज़ खाऊंगा न पियूंगा, जब तक शहन्शाहे नुबुव्वत, सरापा ख़ैरो ब-र-कत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआ़दत ह़ासिल न कर लूं। चुनान्चे वालिदए माजिदा रात के आख़िरी ह़िस्से में आप رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ को ले कर हु़ज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में **दारे अरक़म** ह़ाज़िर हुईं। आ़शिके़ अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से लिपट कर रोने लगे, आक़ाए ग़म गुसार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और वहां मौजूद दीगर मुसल्मानों पर भी गिर्या (या'नी रोना) त़ारी हो गया कि सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ की ह़ालते ज़ार देखी न जाती थी। फिर आप رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ ने मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : येह मेरी वालिदए माजिदा हैं, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के लिये हिदायत की दुआ़ कीजिये और इन्हें दा'वते इस्लाम दीजिये। शाहे ख़ैरुल अनाम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالسَّلَام ने उन को इस्लाम की दा'वत दी, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **वोह उसी वक़्त मुसल्मान हो गईं।**

(البدایة والنھایة ج ۲ ص ۳٦۹۔۳۷۰ دارالفکر بیروت)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (حاکم)

जिसे मिल गया ग़मे मुस्तफ़ा, उसे ज़िन्दगी का मज़ा मिला

कभी सैले अश्क रवां हुवा, कभी ''आह'' दिल में दबी रही

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

राहे ख़ुदा में मुश्किलात पर सब्र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दीने इस्लाम की इशाअ़त व तरवीज के लिये किस क़दर मसाइब व आलाम बरदाश्त किये गए, इस्लाम के अ़ज़ीम मुबल्लिग़ीन ने तन मन धन सब राहे ख़ुदा में क़ुरबान कर दिया ! आज भी अगर **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर जाते, इन्फ़िरादी कोशिश फ़रमाते, सुन्नतें सीखते सिखाते या सुन्नतों पर अ़मल करते कराते हुए अगर मुश्किलात का सामना हो तो हमें आ़शिके अक्बर सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ के ह़ालात व वाक़िआ़त को पेशे नज़र रख कर अपने लिये तसल्ली का सामान मुहय्या कर के म-दनी काम मज़ीद तेज़ कर देना चाहिये और दीन के लिये तन मन धन निसार कर देने का जज़्बा अपने अन्दर उजागर करना चाहिये जैसा कि आ़शिके अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ आख़िरी दम तक इख़्लास और इस्तिक़ामत के साथ दीने इस्लाम की ख़िदमत सर अन्जाम देते रहे, राहे ख़ुदा में जान की बाज़ी लगा दी मगर पाए इस्तिक़्लाल में ज़र्रा बराबर भी लग़्ज़िश न आई, दीने इस्लाम क़बूल करने की पादाश में जो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان मज़्लूमाना ज़िन्दगी बसर कर रहे थे आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उन के लिये रह़मत व शफ़्क़त के दरिया बहा दिये। और बारगाहे रब्बुल उ़ला عَزَّوَجَلَّ से आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने **साह़िबे तक़्वा** का लक़ब पाया और ख़िदमते दीने

खु़दा और उल्फ़ते मुस्त़फ़ा में माल ख़र्च करने पर सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की ता'रीफ़ व तौसीफ़ बयान फ़रमाई।

सात ग़ुलाम ख़रीद कर आज़ाद किये

"**फ़तावा र-ज़विय्या**" जिल्द 28 सफ़ह़ा 509 पर है : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने 7 (ग़ुलामों को ख़रीद कर उन) को आज़ाद किया, इन सब (ग़ुलामों) पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ज़ुल्म तोड़ा जाता था और इन्हीं (सिद्दीक़े अक्बर) के लिये येह आयत उतरी :

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿١٧﴾

(پ ۳۰، اللیل: ۱۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बहुत उस (दोज़ख़) से दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़ गार।

सफ़ह़ा 512 पर इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِى के ह़वाले से है : हम सुन्नियों के **मुफ़स्सिरीन** का इस पर इज्माअ़ है कि "اَتْقٰى" से मुराद ह़ज़रते (सय्यिदुना) अबू बक्र رضی اللہ تعالٰی عنہ हैं।

(फ़तावा र-ज़विय्या)

क़स्रे पाके ख़िलाफ़त के रुक्ने रुकीं शाहे क़ौसैन के नाइबे अव्वलीं
यारे ग़ारे शहन्शाहे दुन्या व दीं अस्दक़ुस्सादिक़ीं सय्यिदुल मुत्तक़ीं
चश्मो गोशे वज़ारत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीन चीज़ें पसन्द हैं

मुशीरे रसूले अन्वर, आ़शिके़ शहन्शाहे बह़रो बर, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं मुझे तीन चीज़ें पसन्द हैं : اَلنَّظَرُ اِلَيْكَ وَاِنْفَاقُ مَالِىْ عَلَيْكَ وَالْجُلُوْسُ بَيْنَ يَدَيْكَ या'नी (1) आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **चेह़रए पुर अन्वार का दीदार करते रहना** (2) आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अपना माल ख़र्च करना और (3) आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर रहना। (تفسیر روح البیان ج٦ ص٢٦٤)

मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रह़मते आ़लम मैं जी रहा हूं ज़माने में आप ही के लिये

तुम्हारी याद को कैसे न ज़िन्दगी समझूं येही तो एक सहारा है ज़िन्दगी के लिये

तीनों आरज़ूएं बर आईं

अल्लाहु दावर عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की येह तीनों ख़्वाहिशें हु़ब्बे रसूले अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके़ पूरी फ़रमा दीं (1) आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को **सफ़र व ह़ज़र में रफ़ाक़ते ह़बीब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नसीब रही, यहां तक कि **ग़ारे सौर** की तन्हाई में आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के सिवा कोई और ज़ियारत से मुशर्रफ़ होने वाला न था (2) इसी त़रह़ माली कु़रबानी की सआ़दत इस कसरत से नसीब हुई कि अपना सारा मालो सामान सरकारे दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों पर कु़रबान कर दिया और (3) मज़ारे पुर अन्वार में भी अपनी दाइमी रफ़ाक़त व कु़रबत इनायत फ़रमाई।

मुह़म्मद है मताए आ़लमे ईजाद से प्यारा

पिदर मादर से मालो जान से औलाद से प्यारा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

काश ! हमारे अन्दर भी जज़्बा पैदा हो जाए

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ के इ़श्क़ो मह़ब्बत भरे वाक़िआ़त हमारे लिये मश्अ़ले राह हैं। राहे इ़श्क़ में आ़शिक़ अपनी ज़ात की परवाह नहीं करता बल्कि उस की दिली तमन्ना येही होती है कि रिज़ाए मह़बूब की ख़ात़िर अपना सब कुछ लुटा दे। काश ! हमारे अन्दर भी ऐसा जज़्बए सादिक़ा पैदा हो जाए कि ख़ुदा व मुस्त़फ़ा की रिज़ा की ख़ात़िर अपना सब कुछ क़ुरबान कर दें।

जान दी, दी हुई उसी की थी

ह़क़ तो येह है कि ह़क़ अदा न हुवा

मह़ब्बत के खोखले दा'वे

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! अब मुसल्मानों की अक्सरिय्यत की ह़ालत येह हो चुकी है कि इ़श्क़ो मह़ब्बत के **खोखले दा'वे** और जानो माल लुटाने के मह़ज़ ना'रे लगाते हैं, ज़ाहिरी ह़ालत देख कर ऐसा लगता है गोया इन के नज़्दीक दुन्या की क़द्र (इ़ज़्ज़त) इस क़दर बढ़ गई है कि مَعَاذَ اللّٰہ इस्लामी अक़्दार की कोई परवाह नहीं रही, नबिय्ये रह़मत, ग़म गुसारे उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक (या'नी नमाज़) की पाबन्दी का कुछ लिह़ाज़ नहीं, ग़ैरों की

नक़्क़ाली में इस क़दर महविय्यत कि **इत्तिबाए़ सुन्नत** का बिलकुल ख़याल नहीं। **अल्लाहु दावर** عَزَّوَجَلَّ हमें आ़शिके़ अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالی عنہ के सदके़ वल्वलए इश्क़ो मह़ब्बत और जज़्बए इत्तिबाए़ सुन्नत इनायत फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

तू इंग्रेज़ी फ़ेशन से हर दम बचा कर मुझे सुन्नतों पर चला या इलाही !
ग़मे मुस्त़फ़ा दे ग़मे मुस्त़फ़ा दे हो दर्दे मदीना अ़त़ा या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

यारे ग़ार का माली ईसार

ग़ज़वए तबूक के मौक़अ़ पर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسلیم ने अपनी उम्मत के अग़निया (या'नी मालदारों) और अरबाबे सरवत (या'नी दौलत मन्दों) को हुक्म दिया कि वोह **अल्लाहु** रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ के रास्ते में जिहाद के लिये माली इमदाद में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लें ताकि मुजाहिदीने इस्लाम के लिये ख़ुर्दो नोश (या'नी खाने पीने) और सुवारियों का इन्तिज़ाम किया जा सके। मह़बूबे रह़मान, शाहे कौनो मकान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने रग़बत निशान की ता'मील करते हुए जिस हस्ती ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये अपनी सारी दौलत बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पेश की वोह सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, आ़शिके़ अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالی عنہ थे, आप رضی اللہ تعالی عنہ ने घर का सारा मालो मताअ़ आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों में ढेर कर दिया। नबिय्ये मुख़्तार, दो आ़लम के ताजदार, शहन्शाहे

अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने यारे ग़ार के इस ईसार को देख कर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या अपने घर बार के लिये भी कुछ छोड़ा ? बसद अ-दबो एह़तिराम अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "उन के लिये मैं अल्लाह और उस के रसूल को छोड़ आया हूं।" (मत़लब येह है कि मेरे और मेरे अहलो इ़याल के लिये अल्लाह व रसूल काफ़ी हैं)

(سبل الهدیٰ والرشاد فی سیرة خیر العباد، ص۴۳۵)

शाइ़र ने इस जज़्बए जां निसारी को यूं नज़्म किया है :

इतने में वोह रफ़ीक़े नुबुव्वत भी आ गया — जिस से बिनाए इ़श्क़ो मह़ब्बत है उस्तुवार
ले आया अपने साथ वोह मर्दे वफ़ा सरिश्त — हर चीज़ जिस से चश्मे जहां में हो ए'तिबार
बोले हुज़ूर, चाहिये फ़िक्रे इ़याल भी — कहने लगा वोह इ़श्क़ो मह़ब्बत का राज़दार
ऐ तुझ से दीदए महो अन्जुम फ़रोग़ गीर — ऐ तेरी ज़ात बाइ़से तक्वीने रूज़गार
परवाने को चराग़ तो बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा का रसूल बस

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर की शान और क़ुरआन

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत अलह़ाज अल क़ारी अल ह़ाफ़िज़ शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن नक़्ल फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی ने "**मफ़ातीह़ुल ग़ैब** (तफ़्सीरे कबीर)" में फ़रमाया कि सूरए वल्लैल (ह़ज़रते सय्यिदुना) **अबू बक्र** رضی الله تعالیٰ عنه की सूरह है और सूरए **वद्दुह़ा** (ह़ज़रते सय्यिदुना) **मुह़म्मद** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सूरह है।"

वस्फ़े रुख़ उन का किया करते हैं शर्हे वश्शम्सो दुह़ा करते हैं

उन की हम मद्ह़ो सना करते हैं जिन को मह़मूद कहा करते हैं

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

आ'ला ह़ज़रत की तशरीह़

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی के इस क़ौले मुबारक की **तशरीह़** करते हुए फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की सूरह को "**वल्लैल**" का नाम देना और मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सूरह का नाम "**वद्दुह़ा**" रखना गोया इस बात की त़रफ़ इशारा है कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिद्दीक़ का नूर और उन की हिदायत और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ उन का वसीला जिन के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल और उस की रिज़ा त़लब की जाती है और सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की राह़त और उन के उन्स व सुकून और इत़्मीनाने नफ़्स की वजह हैं और उन के मह़रमे राज़ और उन के ख़ास मुआ़-मलात से वाबस्ता रहने वाले, इस लिये कि अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला फ़रमाता है : وَجَعَلْنَا الَّیْلَ لِبَاسًا ﴿۱۰﴾ "**और रात को पर्दा पोश किया।**" (پ30، النبا:10) और अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : جَعَلَ لَکُمُ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْکُنُوْا فِیْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّکُمْ تَشْکُرُوْنَ ﴿۷۳﴾ "**तुम्हारे लिये रात और दिन बनाए कि रात में आराम करो और दिन में उस का फ़ज़्ल ढूंडो और इस लिये कि तुम ह़क़ मानो।**" (پ20، القصص:73) और येह इस बात की त़रफ़ तल्मीह़ (या'नी

इशारा) है कि दीन का निज़ाम इन दोनों (मह़बूबे रब्बे अक्बर व सिद्दीक़े अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم وَ رضی اللہ تعالٰی عنہ) से क़ाइम है जैसे कि दुन्या का निज़ाम दिन रात से क़ाइम है तो अगर दिन न हो तो कुछ नज़र न आए और रात न हो तो सुकून ह़ासिल न हो।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 28, स. 679, 681)

ख़ास उस साबिक़े सैरे क़ुर्बे ख़ुदा — औह़दे कामिलिय्यत पे लाखों सलाम

सायए मुस्त़फ़ा, मायए इस्त़फ़ा — इ़ज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

अस्दक़ुस्सादिक़ीं, सय्यिदुल मुत्तक़ीं — चश्मो गोशे वज़ारत पे लाखों सलाम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मिम्बरे मुनव्वर के ज़ीने का एह़तिराम

त़-बरानी ने औसत़ में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के ह़वाले से बयान किया है कि ता ज़ीस्त (या'नी ज़िन्दगी भर) ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ मिम्बरे मुनव्वर पर उस जगह नहीं बैठे जहां हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा होते थे, इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की जगह और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की जगह पर जब तक ज़िन्दा रहे कभी नहीं बैठे। (تاریخُ الْخُلَفاء ص ۷۲)

सरकारे नामदार का यार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ मुह़िब्बे महरे मुनव्वर, रफ़ीक़े रसूले अन्वर, आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ को मह़बूबे रब्बे अक्बर, दो आ़लम के

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बे पनाह इ़श्क़ो मह़ब्बत थी, इसी त़रह़ रसूले रह़मत, सरापा जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी **सिद्दीक़े अक्बर** رضی اللہ تعالٰی عنہ से **मह़ब्बत व शफ़्क़त फ़रमाते**। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने "**फ़तावा र-ज़विय्या**" की जिल्द नम्बर 8 सफ़ह़ा 610 पर वोह अह़ादीसे मुबा-रका जम्अ़ फ़रमाई जिन में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने प्यारे सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की शाने रिफ़्अ़त निशान बयान फ़रमाई है चुनान्चे तीन रिवायात मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : (1) **ह़िबरुल उम्मह** (या'नी उम्मत के बहुत बड़े आ़लिम) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और हु़ज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के सह़ाबा (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) एक तालाब में तशरीफ़ ले गए, हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हर शख़्स अपने यार की त़रफ़ पैरे (या'नी तैरे)। सब ने ऐसा ही किया यहां तक कि सिर्फ़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और (ह़ज़रते सय्यिदुना) अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ बाक़ी रहे, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिद्दीक़ (رضی اللہ تعالٰی عنہ) की त़रफ़ पैर (या'नी तैर) के तशरीफ़ ले गए और उन्हें गले लगा कर फ़रमाया : "**मैं किसी को ख़लील बनाता तो अबू बक्र** رضی اللہ تعالٰی عنہ **को बनाता लेकिन वोह मेरा यार है।**" (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر ج۱۱ص۲۰۸) (2) **ह़ज़रते** (सय्यिदुना) **जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हम ख़िदमते अक़्दस हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर थे, इर्शाद फ़रमाया : इस वक़्त तुम पर वोह शख़्स चमके (या'नी ज़ाहिर हो) गा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

ने मेरे बा'द उस से बेहतर व बुज़ुर्ग तर किसी को न बनाया और उस की शफ़ाअ़त, शफ़ाअ़ते अम्बियाए किराम (عَلَیْہِمُ السَّلَام) के मानिन्द होगी। हम ह़ाज़िर ही थे कि (ह़ज़रते सय्यिदुना) अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ नज़र आए, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ियाम फ़रमाया (या'नी खड़े हो गए) और (ह़ज़रते सय्यिदुना) **सिद्दीक़** رضی اللہ تعالٰی عنہ **को प्यार किया और गले लगाया।** (तारीख़े बग़दाद, जि. 3, स. 340) (3) ह़ज़रते (सय्यिदुना) अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, मैं ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अमीरुल मुअमिनीन (ह़ज़रते सय्यिदुना) अ़ली (अल मुर्तज़ा) كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के साथ खड़े देखा, इतने में अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ह़ाज़िर हुए। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से मुसा-फ़ह़ा फ़रमाया (या'नी हाथ मिलाए) और गले लगाया और उन के दहन (या'नी मुंह) पर बोसा दिया। मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने अ़र्ज़ की : क्या हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अबू बक्र (رضی اللہ تعالٰی عنہ) का मुंह चूमते हैं? फ़रमाया : "ऐ अबुल ह़सन [1] (رضی اللہ تعالٰی عنہ)! अबू बक्र (رضی اللہ تعالٰی عنہ) का मर्तबा मेरे यहां ऐसा है जैसा मेरा मर्तबा मेरे रब (عَزَّوَجَلَّ) के हुज़ूर।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 610, 612)

कहीं गिरतों को संभालें, कहीं रूठों को मनाएं   खोदें इल्ह़ाद की जड़ बा'दे पयम्बर सिद्दीक़
तू है आज़ाद सक़र से तेरे बन्दे आज़ाद   हैयेह सालिक भी तेरा बन्दए बे ज़र सिद्दीक़

(दीवाने सालिक अज़ मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 : अपने बड़े शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رضی اللہ تعالٰی عنہ की निस्बत से अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की कुन्यत "**अबुल ह़सन**" है।

मुरीदे कामिल

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "**फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़**" में फ़रमाते हैं : "औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि पूरी काएनात में **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जैसा न कोई **पीर** है और न **अबू बक्र सिद्दीक़** رضی اللہ تعالٰی عنہ जैसा कोई **मुरीद** है।"

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 11, स. 326)

अ़क़्ल है तेरी सिपर, इश्क़ है शमशीर तेरी मेरे दरवेश ! ख़िलाफ़त है जहांगीर तेरी
मा सिवा अल्लाह के लिये आग है तक्बीर तेरी तू मुसल्मां हो तो तक़्दीर है तदबीर तेरी
की मुह़म्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
येह जहां चीज़ है क्या, लौहो क़लम तेरे हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर ने इमामत फ़रमाई

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 92 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**सवानेहे़ करबला**" सफ़ह़ा 41 पर है : बुख़ारी व मुस्लिम ने ह़ज़रते (सय्यिदुना) अबू मूसा अश्अ़री رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत की, **हु़ज़ूरे अक़्दस** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मरीज़ हुए और मरज़ ने ग़-लबा किया तो फ़रमाया कि **अबू बक्र** को हुक्म करो कि नमाज़ पढ़ाएं। सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह नर्म दिल आदमी हैं आप की जगह खड़े हो कर नमाज़ न पढ़ा सकेंगे। फ़रमाया : हुक्म दो अबू बक्र को कि नमाज़ पढ़ाएं। ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फिर वोही उ़ज़्र पेश किया। हु़ज़ूर

(صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फिर येही हुक्म ब ताकीद फ़रमाया और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबा-रका में नमाज़ पढ़ाई। येह ह़दीसे मु-तवातिर है (जो कि) ह़ज़रते आ़इशा व इब्ने मस्ऊ़द व इब्ने अ़ब्बास व इब्ने अ़म्र व अ़ब्दुल्लाह बिन ज़म्आ़ व अबू सईद व अ़ली बिन अबी त़ालिब व ह़फ़्सा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) वग़ैरहुम से मरवी है। उ़-लमा फ़रमाते हैं कि इस ह़दीस में इस पर बहुत वाज़ेह़ दलालत है कि ह़ज़रते सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ मुत़्लक़न तमाम सह़ाबा से अफ़्ज़ल और ख़िलाफ़त व इमामत के लिये सब से अह़क़ व औला (या'नी ज़ियादा ह़क़दार और बेहतर) हैं। (تارِیخُ الْخُلَفاء ص ٤٧، ٤٨)

इ़ल्म में, ज़ोह्द में बे शुब्ह तू सब से बढ़ कर — कि इमामत से तेरी खुल गए जौहर सिद्दीक़

इस इमामत से खुला तुम हो इमामे अक्बर — थी येही रम्ज़े नबी कहते हैं हैदर सिद्दीक़

(दीवाने सालिक)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़े सादिक़ की येह पहचान है कि वोह हर आन, यादे मह़बूब को ह़िर्ज़े जां बनाए रखता है। इ़श्क़े रसूल की लज़्ज़त से ना आशना लोगों को जब आ़शिक़ों के अन्दाज़ समझ में नहीं आते तो वोह उन का मज़ाक़ उड़ाते, फब्तियां कसते और बातें बनाते हैं। एक शाइ़र ने ऐसे ना समझों को समझाते हुए और ह़क़ीक़ी उ़श्शाक़ के दीवानगी से भरपूर जज़्बात की तरजुमानी करते हुए कहा :

न किसी के रक़्स पे त़न्ज़ कर न किसी के ग़म का मज़ाक़ उड़ा

जिसे चाहे जैसे नवाज़ दे, येह मिज़ाजे इ़श्क़े रसूल है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खु़दा की क़सम अगर हमें आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ के इ़श्क़े रसूल के एक ज़र्रे का करोड़वां ह़िस्सा भी अ़त़ा हो जाए तो हमारा बेड़ा पार हो जाए।

दौलते इ़श्क़ से आक़ा मेरी झोली भर दो
बस येही हो मेरा सामान मदीने वाले

आप के इ़श्क़ में ऐ काश ! कि रोते रोते
येह निकल जाए मेरी जान मदीने वाले

मुझ को दीवाना मदीने का बना लो आक़ा
बस येही है मेरा अरमान मदीने वाले

काश ! अ़त्तार हो आज़ाद ग़मे दुन्या से
बस तुम्हारा ही रहे ध्यान मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ारे सौर का सांप

हिजरते मदीनए मुनव्वरह के मौक़अ़ पर सरकारे नामदार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के राज़दार व जां निसार, यारे ग़ार व यारे मज़ार ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जां निसारी की जो आ'ला मिसाल क़ाइम फ़रमाई वोह भी अपनी जगह बे मिसाल है, थोड़े बहुत अल्फ़ाज़ के फ़र्क़ के साथ मुख़्तलिफ़ किताबों में इस मज़्मून की रिवायात मिलती हैं कि जब अल्लाह के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, बेचैन दिलों के त़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ग़ारे सौर** के क़रीब पहुंचे तो पहले ह़ज़रते सय्यिदुना **सिद्दीके़ अक्बर** رضی اللہ تعالٰی عنہ ग़ार में दाख़िल हुए, सफ़ाई की, तमाम सूराख़ों को बन्द किया, आख़िरी दो सूराख़ बन्द करने के लिये कोई चीज़ न मिली,

तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपने पाउं मुबारक से उन दोनों को बन्द किया, फिर रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسلیم से तशरीफ़ आ-वरी की दर-ख़्वास्त की : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अन्दर तशरीफ़ ले गए और अपने वफ़ादार, यारे ग़ार व यारे मज़ार सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ के ज़ानू पर सरे अन्वर रख कर मह़्वे इस्तिराह़त हो गए (या'नी सो गए)। **उस** ग़ार में एक सांप था उस ने पाउं में डस लिया मगर क़ुरबान जाइये उस पैकरे इश्क़ो मह़ब्बत पर कि दर्द की शिद्दत व कुल्फ़त (या'नी तक्लीफ़) के बा वुजूद मह़ज़ इस ख़याल से कि **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आराम व राह़त में ख़लल वाक़ेअ़ न हो, ब दस्तूर साकिन व सामित (या'नी बे ह़-र-कत व ख़ामोश) रहे, मगर शिद्दते तक्लीफ़ की वजह से ग़ैर इख़्तियारी त़ौर पर चश्माने मुबारक (या'नी आंखों) से आंसू बह निकले और जब **अश्के इश्क़** के चन्द क़त़रे मह़बूबे करीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسلیم के वज्हे करीम (या'नी करम वाले चेहरे) पर निछावर हुए तो **शाहे आ़ली वक़ार,** हम बे कसों के ग़म गुसार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हो गए, इस्तिफ़्सार फ़रमाया : **ऐ अबू बक्र** (رضی اللہ تعالٰی عنہ) ! क्यूं रोते हो ? ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने **सांप** के डसने का वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने डसे हुए ह़िस्से पर अपना **लुआ़बे दहन** (या'नी थूक शरीफ़) लगाया तो फ़ौरन आराम मिल गया।

(مِشْکاۃُ الْمَصابِیح ج٤ ص٤١٧ حدیث ٦٠٣٤وغیرہ)

न क्यूं कर कहूं या ह़बीबी अग़िस्नी !

इसी नाम से हर मुसीबत टली है

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب)

मन्ज़िले सिद्क़ो इश्क़ के रहबर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की अ़-ज़मत और **ग़ारे सौर** वाली ह़िकायत की त़रफ़ इशारा करते हुए किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा :

यार के नाम पे मरने वाला सब कुछ स-दक़ा करने वाला
एड़ी तो रख दी सांप के बिल पर ज़ह्‌र का सदमा सह लिया दिल पर
मन्ज़िले सिद्क़ो इश्क़ का रहबर येह सब कुछ है ख़ात़िरे दिलबर

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह हमारे साथ है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ जब रसूले ज़ी वक़ार, शहन्शाहे अबरार, साह़िबे पसीनए ख़ुश्बूदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह **ग़ारे सौर** में तशरीफ़ ले गए तो कुफ़्फ़ारे ना हन्जार तक़रीबन ग़ार के क़रीब पहुंच चुके थे, इन दोनों मुक़द्दस हस्तियों की ग़ार में मौजू-दगी को अल्लाहु रब्बुल उ़ला عَزَّوَجَلَّ ने पारह 10 सू-रतुत्तौबह आयत नम्बर 40 में यूं बयान फ़रमाया :

ثَانِیَ اثْنَیْنِ اِذْ هُمَا فِی الْغَارِ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : सिर्फ़ दो जान से जब वोह दोनों ग़ार में थे।

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इसी वाक़िए की त़रफ़ इशारा करते हुए सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की शाने अ़-ज़मत निशान यूं बयान फ़रमाते हैं :

या'नी उस अफ़्ज़लुल ख़ल्क़े बा'दर्रुसुल
सानियस्नैने हिजरत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन दोनों मुक़द्दस हस्तियों की ह़िफ़ाज़त के ज़ाहिरी अस्बाब भी पैदा फ़रमा दिये वोह इस त़रह़ की जूंही जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की मइय्यत (या'नी हमराही) में **ग़ारे सौर** में दाख़िल हुए तो ख़ुदाई पहरा लगा दिया गया कि ग़ार के मुंह पर **मकड़ी** ने जाला तन दिया और कनारे पर **कबूतरी** ने अन्डे दे दिये । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 680 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मुका-श-फ़तुल क़ुलूब**" के सफ़ह़ा 132 पर है : येह सब कुछ कुफ़्फ़ारे मक्का को ग़ार की तलाशी से बाज़ रखने के लिये किया गया, उन **दो कबूतरों** को **रब्बे ज़ुल जलाल** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसी बे मिसाल जज़ा दी कि आज तक ह़-रमे मक्का में जितने कबूतर हैं वोह उन्ही दो की औलाद हैं, जैसे उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त की थी वैसे ही रब عَزَّوَجَلَّ ने भी ह़रम में उन के शिकार पर पाबन्दी आइद फ़रमा दी । (مُکاشَفَةُ الْقُلوب ج ۱ ص۵۷ دارالکتب العلمیة بیروت)

फ़ानूस बन के जिस की ह़िफ़ाज़त हवा करे
वोह शम्अ़ क्या बुझे जिसे रोशन ख़ुदा करे

जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने वहां कबूतरों का घोंसला और उस में अन्डे देखे तो कहने लगे : अगर इस ग़ार में कोई इन्सान मौजूद होता तो **न मकड़ी जाला तनती न कबूतरी अन्डे देती** । कुफ़्फ़ार की आहट पा कर आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ कुछ घबरा गए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अब दुश्मन हमारे इस क़दर क़रीब आ गए हैं कि अगर वोह अपने

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (کنزالعمال)

क़दमों पर नज़र डालेंगे तो हमें देख लेंगे । हु़ज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام ने फ़रमाया : لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ (پ ۱۰، التوبۃ:۴۰) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "ग़म न खा, बेशक अल्लाह हमारे साथ है ।"

आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मक्के मदीने के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, सरकारे दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस मो'जिज़ए आ़लीशान और ख़्वारिये दुश्मनान को बयान करते हुए फ़रमाते हैं :

जान हैं, जान क्या नज़र आए
क्यूं अ़दू गिर्दे ग़ार फिरते हैं (ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

फिर आ़शिके़ अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ पर सकीना उतर पड़ा कि वोह बिलकुल ही मुत़्मइन और बे ख़ौफ़ हो गए और चौथे दिन यकुम रबीउ़न्नूर बरोज़ दो शम्बा (या'नी पीर शरीफ़) हु़ज़ूरे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ार से बाहर तशरीफ़ लाए और **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا रवाना हो गए । (माख़ूज़ अज़ अ़जाइबुल कु़रआन मअ़ ग़राइबुल कु़रआन, स. 303, 304, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वाह ! रे मकड़ी तेरा मुक़द्दर !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ काम्याब व बा मुराद हुए और तलाश करने वाले कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार नाकाम व

ना मुराद हुए। **मकड़ी** ने जुस्त-जू का दरवाज़ा बन्द कर के ग़ार का दहाना (मुंह) ऐसा बना दिया कि वहां तक सुराग़ रसानों (या'नी जासूसों) की सोच भी न पहुंच सकी और वोह मायूस हो कर वापस पलटे और **मकड़ी को ला ज़वाल सआदत मुयस्सर** आई जिस को **"मुका-श-फ़तुल क़ुलूब"** में **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने नक़ीब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَسِيْب ने कुछ यूं बयान किया : **रेशम के कीड़ों** ने ऐसा रेशम बुना जो ह़ुस्न में यकता (या'नी बे मिसाल) है मगर वोह **मकड़ी** इन से लाख द-रजे बेहतर है इस लिये कि उस ने ग़ारे सौर में सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये ग़ार के दहाने (या'नी मुंह) पर जाला बुना था। (مُکَاشَفَۃُ الْقُلُوب ج۱ ص۵۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ार के उस पार समुन्दर नज़र आया !

बा'ज़ सीरत निगारों ने लिखा है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जब दुश्मन के देख लेने का ख़दशा ज़ाहिर किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर येह लोग इधर से दाख़िल हुए तो हम उधर से निकल जाएंगे। आ़शिक़े अक्बर सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जूं ही उधर निगाह की तो दूसरी त़रफ़ एक दरवाज़ा नज़र आया जिस के साथ एक समुन्दर ठाठें मार रहा था और ग़ार के दरवाज़े पर एक **कश्ती** बंधी हुई थी।

(مُکَاشَفَۃُ الْقُلُوب ج۱ ص۵۸)

तुम हो ह़फ़ीज़ो मुग़ीस क्या है वोह दुश्मन ख़बीस तुम हो तो फिर ख़ौफ़ क्या तुम पे करोड़ों दुरूद
आस है कोई न पास एक तुम्हारी है आस बस है येही आसरा तुम पे करोड़ो दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है। (جامع صغیر)

मुसीबत में आक़ा से मदद मांगना सहाबा का त़रीक़ा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने सरवरे ज़ीशान, रह़मते आ़-लमियान, शाहे कौनो मकान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मो'जिज़ए राह़त निशान मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि **ग़ारे सौर** की दूसरी त़रफ़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे पुर अन्वार की ब-र-कत से यारे ग़ार व यारे मज़ार رضی اللہ تعالٰی عنہ को **कश्ती व समुन्दर** नज़र आए और यूं फ़ैज़ाने रिसालत से आप رضی اللہ تعالٰی عنہ चैन व राह़त मह़सूस फ़रमाने लगे। इस वाक़िए से मज़ीद येह भी पता चला कि मह़बूबे रब्बुल इबाद, राह़ते हर क़ल्बे नाशाद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़ाजत व मुसीबत के वक़्त त़-लबे इमदाद सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का त़रीक़ा है :

वल्लाह ! वोह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुंचेंगे
इतना भी तो हो कोई जो आह करे दिल से

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर की अनोखी आरज़ू

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ग़ार की त़रफ़ जा रहे थे तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ कभी सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आगे चलते और कभी पीछे। हु़ज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : ऐसा क्यूं करते हो ? अ़र्ज़ की : जब मुझे

तलाश करने वालों का ख़याल आता है तो मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे हो जाता हूं और जब घात में बैठे हुए दुश्मनों का ख़याल आता है तो आगे आगे चलने लगता हूं, मबादा (या'नी ऐसा न हो कि) आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कोई तक्लीफ़ पहुंचे। प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम ख़तरे की सूरत में **मेरे आगे मरना पसन्द** करते हो ? अ़र्ज़ की : "**रब्बे ज़ुल जलाल** की क़सम ! **मेरी येही आरज़ू है।**"

(دَلَائِلُ النُّبُوَّةِ لِلْبَیْهَقِی ج ۲ ص ٤٧٦ مُلَخَّصاً دارالکتب العلمیة بیروت)

यूं मुझ को मौत आए तो क्या पूछना मेरा
मैं ख़ाक पर निगाह दरे यार की त़रफ़ (ज़ौक़े ना'त)

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان सिद्दीक़े अक्बर की मुबारक शान बयान करते हुए फ़रमाते हैं :

बेहतरी जिस पे करे फ़ख़्र वोह बेहतर सिद्दीक़ — सरवरी जिस पे करे नाज़ वोह सरवर सिद्दीक़
ज़ीस्त में मौत में और क़ब्र में सानी ही रहे — सानियस्नैन के इस त़रह़ हैं मज़्हर सिद्दीक़
उन के मद्दाह़ नबी उन का सना गो अल्लाह — ह़क़ अबुल फ़ज़्ल कहे और पयम्बर सिद्दीक़
बाल बच्चों के लिये घर में ख़ुदा को छोड़ें — मुस्त़फ़ा पर करें घर बार निछावर सिद्दीक़

एक घर बार तो क्या ग़ार में जां भी दे दें
सांप डसता रहे लेकिन न हों मुज़्त़र सिद्दीक़ (दीवाने सालिक)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सफ़रे आख़िरत में मुवा-फ़क़त

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार

ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात ज़हर के औद करने (या'नी लौट आने) से हुई ।[1] इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की वफ़ात उस वक़्त **सांप का ज़ह्र** लौट आने से हुई, जिस ने हिजरत की रात **ग़ार** में आप को डसा था । ह़ज़रते सिद्दीक़ को फ़ना फ़िर्रसूल का वोह द-रजा ह़ासिल है कि आप की वफ़ात भी हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात का नुमूना है, पीर के दिन में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात और पीर का दिन गुज़ार कर शब में ह़ज़रते सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की वफ़ात । हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात के दिन शब को चराग़ में तेल न था, ह़ज़रते सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की वफ़ात के वक़्त घर में कफ़न के लिये पैसे न थे । येह है फ़ना । (مراۃ المناجیح ج٨،ص٢٩٥ ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاھور)

इमामे इश्क़ो मह़ब्बत, यारे माहे रिसालत ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की सफ़रे हिजरत की बे मिसाल उल्फ़त व अक़ीदत को सराहते हुए आ'ला ह़ज़रत, अज़ीमुल ब-र-कत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

सिद्दीक़ बल्कि ग़ार में जां उस पे दे चुके और ह़िफ़्ज़े जां तो जान फ़ुरूज़े ग़ुरर की है
हां ! तूने इन को जान, उन्हें फैर दी नमाज़ पर वोह तो कर चुके थे जो करनी बशर की है
साबित हुवा कि जुम्ला फ़राइज़ फ़ुरूअ़ हैं
अस्लुल उसूल बन्दगी उस ताजवर की है (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 : जो ज़ह्र ग़ज़्वए ख़ैबर के मौक़अ़ पर ज़ैनब बिन्ते ह़ारिस यहूदिया ने दिया था । (مدارج النبوۃ ج ٢ ص ٢٥٠)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बदबख़्त हो गया। (ابن سنی)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ह़ज़रात ने रसूले अन्वर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और मह़बूबे ह़बीबे दावर, आ़शिक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ के आख़िरत के सफ़र में मुवा-फ़क़त मुला-ह़ज़ा फ़रमाई कि शाहे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घर ब वक़्ते विसाल चराग़ में तेल न था आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जां निसार सिद्दीक़े ख़ुश ख़िसाल رضی اللہ تعالٰی عنہ का ह़ाल येह था कि बे वफ़ा दुन्या की फ़ानी दौलत के पीछे भागने के बजाए सरमायए इ़श्क़ो मह़ब्बत को समेटा, अपने आप को तक्लीफ़ों में रखना गवारा किया और इसी ह़ालत को राह़ते हर दो सरा (या'नी दोनों जहां का सुकून) जाना।

जान है इ़श्क़े मुस्त़फ़ा रोज़ फ़ुज़ूं करे[1] ख़ुदा
जिस को हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यूं (ह़दाइक़े बख़्शिश)

पता चला बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में साह़िबे क़द्रो मन्ज़िलत वोह नहीं जिस के पास मालो दौलत की कसरत है बल्कि साह़िबे शराफ़त व फ़ज़ीलत और ज़ियादा ज़ी इ़ज़्ज़त वोह है जो ज़ियादा तक़्वा व परहेज़ गारी की दौलत से मालामाल है जैसा कि **अल्लाहु मुजीबुद्दा'वात** عَزَّوَجَلَّ का पारह 26 सू-रतुल हुजुरात की आयत 13 में फ़रमाने इ़ज़्ज़त निशान है :

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ أَتْقٰىكُمْ ط

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह है जो तुम में ज़ियादा परहेज़ गार है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 : या'नी बढ़ाए, ज़ियादा करे।

सिद्दीके़ अक्बर का ग़मे मुस्त़फ़ा

बारगाहे इलाही के मुक़र्रब और प्यारे, दरबारे रिसालत के चमक्ते दमक्ते सितारे, सुल्त़ाने दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों के तारे, दुखियारों के टूटे दिलों के सहारे ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी वफ़ात के मौक़अ़ पर **ग़मे मुस्त़फ़ा** में बे क़रार हो कर येह अश्आ़र कहे :

لَمَّا رَاَيْتُ نَبِيَّنَا مُتَجَدِّلًا ... ضَاقَتْ عَلَيَّ بِعَرْضِهِنَّ الدُّوْر
فَارْتَاعَ قَلْبِىْ عِنْدَ ذَاكَ لِهُلْكِهٖ ... وَالْعَظْمُ مِنِّىْ مَا حَيِيْتُ كَسِيْر
يَا لَيْتَنِىْ مِنْ قَبْلِ مَهْلَكِ صَاحِبِىْ ... غَيَّبْتُ فِىْ جَدْثٍ عَلَى صُخُوْر

तरजमा : (1) जब मैं ने अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वफ़ात याफ़्ता देखा तो मकानात अपनी वुस्अ़त के बा वुजूद मुझ पर तंग हो गए (2) इस वक़्त आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात से मेरा दिल लरज़ उठा और ज़िन्दगी भर मेरी हड्डी शिकस्ता (या'नी टूटी हुई) रहेगी (3) काश ! मैं अपने आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल से पहले चट्टानों पर क़ब्र में दफ़्न कर दिया गया होता।

(اَلْمَواهِبُ اللَّدُنِّيَّة لِلْقَسْطَلَّانِى ج٣ص٣٩٤دار الكتب العلمية بيروت)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان "दीवाने सालिक" में ग़मे मुस्त़फ़ा में इस त़रह़ के जज़्बात का इज़्हार करते हुए फ़रमाते हैं :

जिन्हें ख़ल्क़ कहती है मुस्त़फ़ा, मेरा दिल उन्हीं पे निसार है
मेरे क़ल्ब में हैं वोह जल्वा गर कि मदीना जिन का दियार है
वोह झलक दिखा के चले गए मेरे दिल का चैन भी ले गए
मेरी रूह़ साथ न क्यूं गई, मुझे अब तो ज़िन्दगी बार है
वोही मौत है वोही ज़िन्दगी, जो ख़ुदा नसीब करे मुझे
कि मरे तो उन ही के नाम पर, जो जिये तो उन पे निसार है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

काश ! हमें भी ग़मे मुस्त़फ़ा नसीब हो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिके़ शाहे बह़रो बर, राहे इश्क़ो मह़ब्बत के रहबर, आ़शिके़ अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने अपनी उल्फ़त व अ़क़ीदत का अश्आ़र में किस क़दर सोज़ व रिक़्क़त के साथ इज़्हार फ़रमाया है, काश ! सरवरे काएनात के वज़ीर व दिलबर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالیٰ عنہ के **ग़मे मुस्त़फ़ा** में बहने वाले पाकीज़ा आंसूओं के सदके़ हमें भी **ग़मे मुस्त़फ़ा** में रोने वाली आंखें नसीब हो जाएं ।

हिज्रे रसूल में हमें या रब्बे मुस्त़फ़ा
ऐ काश ! फूट फूट के रोना नसीब हो

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़्वाब में दीदारे मुस्त़फ़ा

आ़रिफ़ बिल्लाह ह़ज़रत अ़ल्लामा इमाम अ़ब्दुर्रह़मान जामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامی ने अपनी मशहूर किताब **"शवाहिदुन्नुबुव्वह"** में **यारे ग़ार व यारे मज़ार**, आ़शिके़ शहन्शाहे अबरार, ख़लीफ़ए अव्वल

ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی الله تعالیٰ عنه की मुबारक ज़िन्दगी के आख़िरी अय्याम का एक ईमान अफ़्रोज़ **ख़्वाब** नक़्ल किया है उस का कुछ ह़िस्सा बयान किया जाता है चुनान्चे सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی الله تعالیٰ عنه फ़रमाते हैं : एक दफ़्अ़ा रात के आख़िरी ह़िस्से में मुझे ख़्वाब के अन्दर **दीदारे मुस्त़फ़ा** की सआ़दत नसीब हुई, आप صلی الله تعالیٰ علیه واله وسلم ने दो सफ़ेद कपड़े ज़ैबे बदन फ़रमा रखे थे और मैं इन कपड़ों के दोनों कनारों को मिला रहा था, अचानक वोह दोनों कपड़े **सब्ज़** होना और चमकना शुरूअ़ हो गए, उन की दरख़्शानी व ताबानी (या'नी चमक दमक) आंखों को ख़ीरा (या'नी चका चौंद) करने वाली थी, **हु़ज़ूरे पुरनूर** صلی الله تعالیٰ علیه واله وسلم ने मुझे "अस्सलामु अ़लय कुम" कह कर मुसा-फ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाने) से मुशर्रफ़ फ़रमाया और अपना दस्ते मुक़द्दस मेरे सीनए पुरदर्द पर रख दिया जिस से मेरा इज़्तिराबे क़ल्बी (या'नी दिल का बे क़रार होना) दूर हो गया फिर फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र (رضی الله تعالیٰ عنه) ! मुझे तुम से मिलने का बहुत इश्तियाक़ (या'नी ख़्वाहिश) है, क्या अभी वक़्त नहीं आया कि तुम मेरे पास आ जाओ ?" मैं ख़्वाब में बहुत रोया यहां तक कि मेरे अहले ख़ाना को भी मेरे रोने की ख़बर हो गई जिन्हों ने बेदार होने के बा'द मुझे ख़्वाब की इस गिर्या व ज़ारी से मुत्त़लअ़ किया।

(شواهد النبوة للجامی ص۱۹۹ مکتبة الحقیقة ترکی)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

यौमे वफ़ात और कफ़न में शौके़ मुवा-फ़क़त

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 274 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**सह़ाबए किराम**

का इश्क़े रसूल'' सफ़हा 67 पर मन्क़ूल है : **हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर** رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपनी वफ़ात से चन्द घन्टे पेशतर (या'नी क़ब्ल) अपनी शहज़ादी हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से दरयाफ़्त किया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कफ़न में कितने कपड़े थे ? हुज़ूर रहमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात शरीफ़ किस दिन हुई ? इस सुवाल की वजह येह थी कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की आरज़ू थी कि कफ़न व यौमे वफ़ात में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **मुवा-फ़क़त** हो, जिस तरह हयात में हुज़ूर सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **इत्तिबाअ़** (या'नी पैरवी) की इसी तरह ममात (या'नी वफ़ात) में भी हो।

(صَحیح بُخاری حدیث۱۳۸۷، ج۱، ص۴۶۸دار الکتب العلمیة بیروت)

अल्लाह अल्लाह येह शौक़े इत्तिबाअ़
क्यूं न हो सिद्दीक़े अक्बर थे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर की वफ़ात का सबब ग़मे मुस्तफ़ा था

سُبْحٰنَ الله عَزَّوَجَلَّ ! अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ इश्क़े रसूले बा कमाल व बे मिसाल की दौलते ला ज़वाल से किस क़दर मालामाल थे, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के शबो रोज़ के अहवाल, बीबी आमिना के लाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इश्क़े बे मिसाल का **मज़्हरे अतम** (या'नी कामिल तरीन इज़्हार) हैं। उम्मी नबी, रसूले हाशिमी, मक्की म-दनी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की मुबारक ज़िन्दगी में **सन्जी-दगी ज़ियादा ग़ालिब आ गई** और

(तक़्रीबन 2 साल 7 माह पर मुश्तमिल) अपनी बक़िय्या ज़िन्दगी के लैलो नहार (या'नी दिन रात) गुज़ारना इन्तिहाई दुश्वार हो गया और आप رضی اللہ تعالٰی عنہ यादे सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में बे क़रार रहने लगे, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की वफ़ात का अस्ल सबब सरवरे काएनात की (ज़ाहिरी) वफ़ात था कि इसी सदमे से आप رضی اللہ تعالٰی عنہ का मुबारक बदन घुलने लगा और येही वफ़ात का बाइ़स बना। (تاریخ الخلفاء ص ٦٢ بتغیر)

मर ही जाऊं मैं अगर इस दर से जाऊं दो क़दम
क्या बचे बीमारे ग़म क़ुर्बे मसीहा़ छोड़ कर

(ज़ौक़े ना'त)

मरीज़े मुस्त़फ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रह़मान जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **"तारीखुल खु-लफ़ा"** में नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ के ज़मानए अ़लालत (या'नी बीमारी के अय्याम) में लोग इ़यादत के लिये ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : **ऐ जा नशीने रसूल** رضی اللہ تعالٰی عنہ ! इजाज़त हो तो हम आप के लिये त़बीब लाएं। फ़रमाया : त़बीब ने तो मुझे देख लिया है। अ़र्ज़ किया : त़बीब ने क्या कहा ? इर्शाद फ़रमाया कि उस ने फ़रमाया : "اِنِّی فَعَّالٌ لِّمَا اُرِیْدُ" या'नी **मैं जो चाहता हूं करता हूं।**" (تاریخ الخلفاء ص ٦٢) मुराद येह थी कि ह़कीम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है, उस की

मरज़ी को कोई टाल नहीं सकता, जो मशिय्यत (या'नी मरज़ी) है ज़रूर होगा । येह ह़ज़रते सिद्दीके़ अक्बर का तवक्कुले सादिक़ था और रिज़ाए ह़क़ पर राज़ी थे ।

(सवानेहे़ करबला, स. 48, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

मैं मरीज़े मुस्त़फ़ा हूं मुझे छेड़ो न त़बीबो !
मेरी ज़िन्दगी जो चाहो मुझे ले चलो मदीना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दिल मेरा दुन्या पे शैदा हो गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिके़ साक़िये कौसर, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर वाके़ई मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **आ़शिके़ अक्बर** हैं । ग़मे हिज्रे मुस्त़फ़ा व इ़श्के़ रसूले मुज्तबा में बीमार हो जाना आप के "आ़शिके़ अक्बर" होने की दलील है । दिल की कुढ़न और जलन का सबब सिर्फ़ मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद और उन का फ़िराक़ था और एक हम हैं कि हमारा दिल **दुन्या की मह़ब्बत**, आ़रिज़ी हुस्नो जमाल और चन्द रोज़ा जाहो जलाल ही का शैदा है और इसी के लिये तड़पता, तरसता और नफ़्सानी ख़्वाहिशात पूरी न होने पर ह़स्रतो यास से आहें भरता है ।

दिल मेरा दुन्या पे शैदा हो गया ऐ मेरे अल्लाह येह क्या हो गया
कुछ मेरे बचने की सूरत कीजिये अब तो जो होना था मौला हो गया
ऐ़ब पोशे ख़ल्क़ दामन से तेरे
सब गुनहगारों का पर्दा हो गया

(ज़ौके़ ना'त)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर को ज़ह्र दिया गया

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के विसाले ज़ाहिरी के अस्बाब मुख़्तलिफ़ बताए जाते हैं, बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ ग़ारे सौर वाले **सांप के ज़ह्र** के असर के औ़द करने (या'नी लौट कर आ जाने) के सबब आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की वफ़ात हो गई। एक सबब येह बताया गया कि **ग़मे मुस्त़फ़ा** में घुल घुल कर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जान दे दी जब कि इब्ने सा'द व ह़ाकिम ने इब्ने शहाब से रिवायत की है कि (सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की वफ़ात का ज़ाहिरी सबब येह था कि) आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के पास किसी ने तोह़फ़तन **ख़ुज़ैरह** (या'नी क़ीमे वाला दलिया) भेजा था, आप और ह़ारिस बिन क-लदह दोनों खाने में शरीक थे (कुछ खाने के बा'द) ह़ारिस ने (जो कि त़बीब था) अ़र्ज़ की : ऐ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह! हाथ रोक लीजिये (और इसे न खाइये) कि इस में **ज़ह्र** है और येह वोह ज़ह्र है जिस का असर एक साल में ज़ाहिर होता है, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ देख लीजियेगा कि एक साल के अन्दर अन्दर मैं और आप एक ही दिन फ़ौत होंगे। येह सुन कर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने खाने से हाथ खींच लिया लेकिन **ज़ह्र** अपना काम कर चुका था और येह दोनों इसी दिन से बीमार रहने लगे और एक साल गुज़रने के बा'द (उसी ज़ह्र के असर से) एक ही दिन में इन्तिक़ाल किया।

(تارِیخُ الْخُلَفاء ص۶۲)

हाए! ज़लील दुन्या!!

ह़ाकिम की येह रिवायत शअ़बी से है कि उन्हों ने कहा : इस

दुन्याए दूं (या'नी ज़लील दुन्या) से हम भला क्या तवक़्क़ोअ़ रखें कि (इस में तो) रसूले ख़ुदा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी ज़ह्र दिया गया और ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ को भी । (ऐज़न) इन अक़्वाल में तआ़रुज़ (या'नी टकराव) नहीं, हो सकता है (वफ़ात शरीफ़ में) तीनों अस्बाब जम्अ़ हो गए हों । (نزھۃ القاری ج ۲ ص ۸۷۷ فرید بک اسٹال) **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वाक़ेई दुन्या की मह़ब्बत अन्धी होती है, इस ज़लील दुन्या की उल्फ़त की वजह से ही सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आ़शिक़े अक्बर सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ को ज़ह्र दिया गया, जब काएनात की सब से बड़ी हस्ती या'नी ज़ाते न-बवी को भी ज़लील दुन्या के ना मुराद कुत्तों ने ज़ह्र देने की नापाक साज़िश की तो अब और कौन है जो अपने आप को इस से मह़फ़ूज़ समझे ! लिहाज़ा बिल ख़ुसूस नामवर उ़-लमा व मशाइख़ और मज़्हबी पेशवाओं को ज़ियादा मोह़तात़ रहने की ज़रूरत है । देखिये ना ! इसी कमीनी दुन्या के इश्क़ में मस्त हो कर किसी ना बकार ने सय्यिदुल अस्ख़िया, राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा, नवासए रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़-सने मुज्तबा رضی اللہ تعالٰی عنہ को भी कई बार ज़ह्र दिया और आख़िर **ज़ह्र ख़ूरानी** ही वफ़ात का बाइ़स बनी । नीज़ **ह़ज़रते** सय्यिदुना बिश्र बिन बराअ رضی اللہ تعالٰی عنہ **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम मूसा काज़िम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ की वफ़ाते ह़सरत आयात का सबब भी **ज़ह्र** हुवा ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (کنز العمال)

या रसूलल्लाह ! अबू बक्र हाज़िर है

विसाले ज़ाहिरी से क़ब्ल फ़ैज़याबे फ़ैज़ाने नुबुव्वत, साहिबे फ़ज़ीलत व करामत हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने **वसिय्यत** फ़रमाई कि मेरे जनाज़े को शाहे बहरो बर, मदीने के ताजवर, हबीबे दावर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर के पाक दर के सामने ला कर रख देना और اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله कह कर अ़र्ज़ करना : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अबू बक्र आस्तानए आलिया पर हाज़िर है।" अगर दरवाज़ा ख़ुद ब ख़ुद खुल जाए तो अन्दर ले जाना वरना जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न कर देना। जनाज़ए मुबा-रका को हस्बे वसिय्यत जब रौज़ए अक़्दस के सामने रखा गया और अ़र्ज़ किया गया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله ! अबू बक्र हाज़िर है। येह अ़र्ज़ करते ही **दरवाज़े का ताला ख़ुद ब ख़ुद खुल गया** और आवाज़ आने लगी : اُدْخِلُوا الْحَبِيْبَ اِلَى الْحَبِيْبِ فَاِنَّ الْحَبِيْبَ اِلَى الْحَبِيْبِ مُشْتَاقٌ या'नी महबूब को महबूब से मिला दो कि महबूब को महबूब का इश्तियाक़ है। (تفسیر کبیر ج ۱۰ ص ۱۶۷ داراحیاء التراث العربی بیروت)

तेरे क़दमों में जो हैं ग़ैर का मुंह क्या देखें
कौन नज़रों पे चढ़े देख के तल्वा तेरा

(हदाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर हयातुन्नबी के क़ाइल थे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर ! अगर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को

ज़िन्दा न जानते तो हरगिज़ ऐसी वसिय्यत न फ़रमाते कि रौज़ए अक्दस के सामने मेरा जनाज़ा रख कर नबिय्ये रह़मत صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم से इजाज़त त़लब की जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने वसिय्यत की और सह़ाबए किराम علیہم الرضوان ने इसे अ़-मली जामा पहनाया, जिस से साबित होता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ और तमाम सह़ाबए किराम علیہم الرضوان का येह अ़क़ीदा था कि मह़बूबे परवर्द गार, शाहे आ़लम मदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم बा'दे विसाल भी क़ब्रे अन्वर में ज़िन्दा व ह़यात और साह़िबे तसर्रुफ़ात व इख़्तियारात हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عزّوجلّ !

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

(ह़दाइके बख़्शिश शरीफ़)

ह़यातुल अम्बिया

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عزّوجلّ ! ब अ़त़ाए रब्बुल अनाम तमाम अम्बियाए किराम علیہم الصلوٰۃ والسلام ज़िन्दा हैं। चुनान्चे "इब्ने माजह" की ह़दीसे पाक में है :

اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَی الْاَرْضِ اَنْ تَاْکُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَاءِ فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُّرْزَقُ.

बेशक **अल्लाह** (عزّوجلّ) ने ह़राम किया है ज़मीन पर कि अम्बिया (علیہم الصلوٰۃ والسلام) के जिस्मों को ख़राब करे तो **अल्लाह** (عزّوجلّ) के नबी ज़िन्दा हैं, रोज़ी दिये जाते हैं।

(सु-नने इब्ने माजह, जि. 2, स. 291, ह़दीस : 1637)

एक और ह़दीसे पाक में है : اَلْاَنْبِيَاءُ اَحْيَاءٌ فِىْ قُبُوْرِهِمْ يُصَلُّوْن या'नी अम्बिया ह़यात हैं और अपनी अपनी क़ब्रों में नमाज़ पढ़ते हैं।

(مُسْنَدُ اَبِىْ يَعْلٰى ج٣ ص٢١٦ حديث٣٤١٢ دارالكتب العلمية بيروت)

गुस्ताख़े रसूल से दूर रहो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मु-तअ़ल्लिक़ हर मुसल्मान का वोही अ़क़ीदा होना ज़रूरी है जो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और अस्लाफ़े उ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام का था, अगर مَعَاذَالله शैत़ान **वस्वसे** पैदा करने की कोशिश करे और अ़-ज़-मते व शाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में त़ा'ना ज़नी करते हुए अ़क़्ली दलाइल से क़ाइल करने की नापाक सअ़्य (कोशिश) करे तो उस से अलग थलग हो जाइये जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 162 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**ईमान की पहचान**" सफ़ह़ा 58 पर आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن आ़शिक़ाने रसूल को ताकीद करते हुए फ़रमाते हैं : "जब वोह (या'नी गुस्ताख़ाने रसूल) रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ी करें अस्लन (या'नी बिलकुल) तुम्हारे क़ल्ब में उन (गुस्ताख़ों) की अ़-ज़मत, उन की मह़ब्बत का नामो निशान न रहे फ़ौरन उन (गुस्ताख़ों) से अलग हो जाओ, उन (लोगों) को दूध से मख्खी की त़रह़ निकाल कर फेंक दो, उन (बद बख़्तों) की सूरत, उन के नाम से नफ़रत खाओ फिर न तुम अपने रिश्ते, इलाक़े, दोस्ती, उल्फ़त का पास करो न उन की मौलविय्यत, मशैख़िय्यत, बुज़ुर्गी, फ़ज़ीलत को ख़त़रे (या'नी ख़ात़िर)

में लाओ। आख़िर येह जो कुछ (रिश्ता व तअ़ल्लुक़) था, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गुलामी की बिना पर था, जब येह शख़्स उन ही की शान में गुस्ताख़ हुवा फिर हमें उस से क्या इलाक़ा (तअ़ल्लुक़) रहा ?"

(ईमान की पहचान, स. 58, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

उन्हें जाना उन्हें माना न रखा ग़ैर से काम
لِلّٰہِ الْحَمْد ! मैं दुन्या से मुसलमान गया

उफ़ रे मुन्किर येह बढ़ा जोशे तअ़स्सुब आख़िर
भीड़ में हाथ से कम बख़्त के ईमान गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गुस्ताखे़ सह़ाबा से दूर रहो

ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی "शर्हुस्सुदूर" में नक़्ल करते हैं : एक शख़्स की मौत का वक़्त क़रीब आ गया तो उस से कलिमए तय्यिबा पढ़ने के लिये कहा गया। उस ने जवाब दिया कि मैं इस के पढ़ने पर क़ादिर नहीं हूं क्यूं कि मैं ऐसे लोगों के साथ निशस्तो बरख़ास्त (या'नी उठना बैठना) रखता था जो मुझे **अबू बक्र व उ़मर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के बुरा भला कहने की तल्क़ीन करते थे। (شَرْحُ الصُّدُور ص۳۸ مرکز اھلسنت برکات رضا الھند)

क़ब्र में शैख़ैन का वसीला काम आ गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से शैख़ैने करीमैन या'नी सय्यिदैना **सिद्दीक़ व फ़ारूक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की बुलन्द शानें मा'लूम हुई, जब उन की तौहीन करने वालों से दोस्ती रखने का येह वबाल कि मरते वक़्त कलिमा नसीब नहीं हो रहा था तो फिर जो लोग

ख़ुद तौहीन करते हैं उन का क्या ह़ाल होगा ! लिहाज़ा शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا के गुस्ताख़ों से दूर व नुफ़ूर रहना ज़रूरी है । सिर्फ़ आ़शिक़ाने रसूल व मुह़िब्बाने सह़ाबा व औलिया की सोह़बत इख़्तियार कीजिये, इन अ़ज़ीम हस्तियों की उल्फ़त का दिया (या'नी चराग़) अपने दिल में रोशन कीजिये । और दोनों जहां की भलाइयों के ह़क़दार बनिये । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की मह़ब्बत क़ब्रो ह़श्र में बेह़द कार आमद है चुनान्चे एक शख़्स का बयान है : मेरे उस्ताज़ के एक साथी फ़ौत हो गए । उस्ताद साहि़ब ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला किया ? जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी । पूछा : **मुन्कर नकीर** के साथ कैसी रही ? जवाब दिया : उन्हों ने मुझे बिठा कर जब सुवालात शुरूअ़ किये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे दिल में डाला और मैं ने फ़िरिश्तों से कह दिया : "सय्यिदैना **अबू बक्र व फ़ारूक़** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا के वासिते़ मुझे छोड़ दीजिये ।" येह सुन कर एक फ़िरिश्ते ने दूसरे से कहा : "इस ने बड़ी बुज़ुर्ग हस्तियों का वसीला पेश किया है लिहाज़ा इस को छोड़ दो ।" चुनान्चे उन्हों ने मुझे छोड़ दिया और तशरीफ़ ले गए ।

(شَرْحُ الصُّدُور ص ١٤١)

वासिता़ दिया जो आप का

मेरे सारे काम हो गए

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बरोज़े महशर मज़ाराते मुनव्वर से बाहर आने का ह़सीन मन्ज़र

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" सफ़्ह़ा 61 पर इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن बयान फ़रमाते हैं : एक मर्तबा **हुज़ूरे अक्दस** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दाहिने (या'नी सीधे) दस्ते अक्दस में **ह़ज़रते सिद्दीक़** رضی اللہ تعالٰی عنہ का हाथ लिया और बाएं (या'नी उलटे) दस्ते मुबारक में **ह़ज़रते उ़मर** رضی اللہ تعالٰی عنہ का हाथ लिया और फ़रमाया : هٰكَذَا نُبْعَثُ يَوْمَ الْقِيَامَة या'नी हम क़ियामत के रोज़ यूं ही उठाए जाएंगे।
(तिरमिज़ी, जि. 5, स. 378, ह़दीस : 3689, तारीख़े दिमिश्क़, जि. 21, स. 297)

मह़बूबे रब्बे अ़र्श है इस सब्ज़ क़ुब्बे में
पहलू में जल्वा गाह अ़तीक़ो उ़मर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

राहे ख़ुदा में आने वाली मुश्किलात का सामना कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे रहबर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ यक़ीनन आ़शिक़े अक्बर हैं, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपने इ़श्क़ का इज़्हार अ़मल व किरदार से किया और जब इ़श्क़ की राह, पुरख़ार और सख़्त दुश्वार गुज़ार हुई तब भी आप رضی اللہ تعالٰی عنہ जज़्बए इ़श्क़े शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सरशार रहे, ख़त़ीबे अव्वल का शरफ़ पाते हुए दीने इस्लाम की ख़ात़िर शदीद मार पड़ने के बा वुजूद आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के पाए

इस्तिक़्लाल में ज़र्रा भर भी लग़्ज़िश न आई। **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **में आप** رضی اللہ تعالٰی عنہ **की इस मुश्किलात भरी ह़यात में हमारे लिये येह दर्स है** कि "नेकी की दा'वत" की राहों में ख़्वाह कैसे ही मसाइब का सामना हो मगर पीछे हटना कुजा इस का ख़्याल भी दिल में न आने पाए।

जब आक़ा आख़िरी वक़्त आए मेरा मेरा सर हो तेरा बाबे करम हो
सदा करता रहूं सुन्नत की ख़िदमत मेरा जज़्बा किसी सूरत न कम हो

(वसाइले बख़्शिश)

ग़मे दुन्या में नहीं ग़मे मुस्त़फ़ा में रोएं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिके़ अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की इ़श्क़ो मह़ब्बत भरी मुबारक ज़िन्दगी से हमें येह भी दर्स मिलता है कि हमारी आहें और सिस्कियां दुन्या की ख़ात़िर न हों, मह़ब्बते दुन्या में आंसू न बहें, दुन्यवी जाहो ह़शमत (या'नी शानो शौकत) के लिये सीने में कसक पैदा न हो बल्कि हमारे दिल की ह़सरत, हुब्बे नबी हो, आंसू यादे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में बहें, दुन्या के दीवाने नहीं बल्कि शम्ए़ रिसालत के परवाने बनें, उन्ही की पसन्द पर अपनी पसन्द कु़रबान करें और येही ख़्वाहिश हो कि काश ! मेरा माल, मेरी जान मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आन पर कु़रबान हो जाए, उन से निस्बत रखने वाली हर चीज़ दिल अ़ज़ीज़ हो, जो ख़ुश बख़्त ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारने में काम्याब हो गया तो अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला उस के लिये दुन्या मुसख़्ख़र और मख़्लूक़ को उस के ताबेअ़ कर देगा, आस्मानों में उस के चरचे होंगे और सब से बढ़ कर येह कि वोह ख़ुदा व मुस्त़फ़ा का मह़बूब बन जाएगा।

वोह कि उस दर का हुवा ख़ल्के़ ख़ुदा उस की हुई

वोह कि उस दर से फिरा अल्लाह उस से फिर गया

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

लेकिन अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! आज के मुसल्मानों की अक्सरिय्यत शाहे अबरार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **उस्वए ह़-सना** को अपना मे'यार बनाने के बजाए अग़्यार के शिआ़र और फ़ेशन पर निसार हो कर ज़लीलो ख़्वार होती जा रही है।

कौन है तारिके आईने रसूले मुख़्तार मस्लह़त, वक़्त की है किस के अ़मल का मे'यार

किस की आंखों में समाया है शिआ़रे अग़्यार हो गई किस की निगह त़र्ज़े सलफ़ से बेज़ार

क़ल्ब में सोज़ नहीं, रूह़ में एह़सास नहीं

कुछ भी पैग़ामे मुह़म्मद का तुम्हें पास नहीं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى الله اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

येह कैसा इ़श्क़ और कैसी मह़ब्बत है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो लोग अपने वालिदैन से मह़ब्बत करते हैं वोह उन का दिल नहीं दुखाते, जिन्हें अपने बच्चे से मह़ब्बत होती है वोह उसे नाराज़ नहीं होने देते, कोई भी अपने दोस्त को ग़मज़दा देखना गवारा नहीं करता क्यूं कि जिस से मह़ब्बत होती है उसे रन्जीदा नहीं किया जाता मगर आह ! आज के अक्सर मुसल्मान जो कि इ़श्क़े रसूल के दा'वेदार हैं मगर उन के काम मह़बूबे रब्बुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शाद करने वाले नहीं, सुनो !

सुनो ! **रसूले ज़ी वक़ार**, दो आ़लम के ताजदार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''جُعِلَتْ قُرَّةُ عَيْنِىْ فِى الصَّلٰوةِ या'नी मेरी आंखों की ठन्डक नमाज़ में है ।'' (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج٢٠ص٤٢٠حديث١٠١٢) वोह कैसे आ़शिके़ रसूल हैं जो कि नमाज़ से जी चुरा कर, नमाज़ जान बूझ कर क़ज़ा कर के सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ल्बे पुर अन्वार के लिये तक्लीफ़ व आज़ार का सबब बनते हैं । येह कौन सी मह़ब्बत और कैसा इ़श्क़ है कि रसूले रफ़ीउ़श्शान, मदीने के सुल्त़ान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم माहे र-मज़ान के रोज़ों की ताकीद फ़रमाएं मगर ख़ुद को **आ़शिक़ाने रसूल** में खपाने वाले इस हुक्मे वाला से रू गर्दानी कर के नाराज़िये मुस्त़फ़ा का सबब बनें, हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़े तरावीह़ की ताकीद फ़रमाए मगर सुस्त व ग़ाफ़िल उम्मतियों से न पढ़ी जाए, पढ़ें भी तो रस्मन माहे र-मज़ान के इब्तिदाई चन्द दिन और फिर येह समझ बैठें कि पूरे र-मज़ानुल मुबारक की नमाज़े तरावीह़ अदा हो गई । प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाएं : ''मूंछें ख़ूब पस्त (या'नी छोटी) करो और दाढ़ियों को मुआ़फ़ी दो (या'नी बढ़ाओ) यहूदियों की सी सूरत न बनाओ ।'' (شرح معانی الآثار للطحاوی ج٤ ص٢٨ دارالكتب العلمية بيروت) मगर **इ़श्क़े रसूल** के दा'वेदार मगर फ़ेशन के परस्तार दुश्मनाने सरकार जैसा चेहरा बनाएं, क्या येही इ़श्क़े रसूल है ?

सरकार का आ़शिक़ भी क्या दाढ़ी मुंडाता है ?

क्यूं इ़श्क़ का चेहरे से इज़्हार नहीं होता !

फ़िक्रे मदीना[1] कीजिये ! येह कैसा इ़श्क़ और कैसी मह़ब्बत है ? कि मह़बूबे ख़ुश ख़िसाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुश्मनों जैसी शक्लो सूरत व चाल ढाल अपनाने में फ़ख़्र मह़सूस किया जाए !

वज़्अ़ में तुम हो नसारा तो तमद्दुन में हुनूद

येह मुसल्मां हैं जिन्हें देख के शरमाएं यहूद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मोह़सिन व करीम और शफ़ीक़ व रह़ीम आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो हमें हमेशा याद फ़रमाते रहे, बल्कि दुन्या में तशरीफ़ लाते ही आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सज्दा किया। उस वक़्त होंटों पर येह दुआ़ जारी थी : رَبِّ هَبْ لِیْ اُمَّتِیْ या'नी परवर्द गार ! मेरी उम्मत मुझे हिबा कर दे।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 30, स. 717)

पहले सज्दे पे रोज़े अज़ल से दुरूद

यादगारिये उम्मत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

ता क़ियामत "उम्मती उम्मती" फ़रमाएंगे

मदारिजुन्नुबुव्वह में है : ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुसम رضی اللہ تعالیٰ عنہ वोह शख़्स थे जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ब्रे अन्वर में उतारने के बा'द सब से आख़िर में बाहर आए थे, चुनान्चे उन का बयान है कि मैं ही आख़िरी शख़्स हूं जिस ने **हु़ज़ूरे अन्वर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रूए मुनव्वर, क़ब्रे अत़्हर में देखा था, मैं ने देखा कि सुल्त़ाने मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ब्रे अन्वर में अपने लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश फ़रमा रहे थे (या'नी

1 : दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में अपने आ'माल का मुह़ा-सबा करने को **"फ़िक्रे मदीना"** कहते हैं।

मुबारक होंट हिल रहे थे) मैं ने अपने कानों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दहन (या'नी मुंह) मुबारक के क़रीब किया, मैं ने सुना कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते थे "رَبِّ اُمَّتِی اُمَّتِی" (या'नी परवर्द गार ! मेरी उम्मत मेरी उम्मत) (مَدارِجُ النُّبوة ج٢ ص ٤٤٢) नीज़ **कन्ज़ुल उ़म्माल** जिल्द 7 सफ़्ह़ा 178 पर है : **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जब मेरी वफ़ात हो जाएगी तो अपनी क़ब्र में हमेशा पुकारता रहूंगा : يَا رَبِّ اُمَّتِی اُمَّتِی ऐ परवर्द गार ! मेरी उम्मत मेरी उम्मत। यहां तक कि दूसरा सूर फूंका जाए।" (كَنْزُ الْعُمَّال) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत अपने लिये ईमान की ह़िफ़ाज़त की ख़ैरात त़लब करते हुए बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं :

जिन्हें मरक़द में ता ह़श्र उम्मती कह कर पुकारोगे
हमें भी याद कर लो उन में सदक़ा अपनी रह़मत का

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

मुह़द्दिसे आ'ज़मे पाकिस्तान ने फ़रमाया

मुह़द्दिसे आ'ज़मे पाकिस्तान ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना सरदार अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد फ़रमाया करते थे कि ह़ुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो सारी उ़म्र हमें **उम्मती उम्मती** कह कर याद फ़रमाते रहे, क़ब्रे अन्वर में भी **उम्मती उम्मती** फ़रमा रहे हैं और ह़श्र तक फ़रमाते रहेंगे यहां तक कि मह़शर के रोज़ भी **उम्मती उम्मती** फ़रमाएंगे। ह़क़ येह है कि अगर सिर्फ़ एक बार भी **उम्मती** फ़रमा देते और हम सारी ज़िन्दगी **या नबी या नबी, या रसूलल्लाह या ह़बीबल्लाह** कहते रहें तब भी उस एक बार **उम्मती** कहने का ह़क़ अदा नहीं हो सकता।

जिन के लब पर रहा "उम्मती उम्मती" याद उन की न भूल ऐ नियाज़ी कभी

वोह कहें उम्मती तू भी कह या नबी मैं हूं ह़ाज़िर तेरी चाकरी के लिये

बरोज़े क़ियामत फ़िक्रे उम्मत का अन्दाज़

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, हुज़ूर शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : क़ियामत के दिन तमाम अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) सोने के मिम्बरों पर जल्वा गर होंगे, मेरा मिम्बर ख़ाली होगा क्यूं कि मैं अपने **रब** के हुज़ूर ख़ामोश खड़ा होउंगा कि कहीं ऐसा न हो अल्लाह मुझे जन्नत में जाने का हुक्म फ़रमा दे और मेरी उम्मत मेरे बा'द परेशान फिरती रहे। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा : ऐ मह़बूब ! तेरी उम्मत के बारे में वोही फ़ैसला करूंगा जो तेरी चाहत है। मैं अ़र्ज़ करूंगा اَللّٰهُمَّ عَجِّلْ حِسَابَهُمْ या'नी ऐ अल्लाह ! इन का ह़िसाब जल्दी ले ले (कि मैं इन को साथ ले कर जाना चाहता हूं) येह मुसल्सल अ़र्ज़ करता रहूंगा यहां तक कि मुझे दोज़ख़ में जाने वाले मेरे उम्मतियों की फ़ेहरिस्त दे दी जाएगी (जो जहन्नम में दाख़िल हो चुके होंगे उन की शफ़ाअ़त कर के मैं उन्हें निकालता जाऊंगा) यूं अ़ज़ाबे इलाही के लिये मेरी उम्मत का कोई फ़र्द न बचेगा। (كَنْزُ الْعُمَّال ج۷ ص۱٤ رقم ۳۹۱۱۱ دارالكتب العلمية بيروت)

अल्लाह ! क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा

रो रो के मुस्त़फ़ा ने दरिया बहा दिये हैं

ऐ **आ़शिक़ाने रसूल !** उम्मत के ग़म ख़्वार आक़ा के क़दमों पर निसार हो जाइये और ज़िन्दगी उन की ग़ुलामी बल्कि उन के ग़ुलामों की ग़ुलामी और **दा'वते इस्लामी** और इस के **म-दनी क़ाफ़िलों**

के अन्दर सफ़र में गुज़ार कर मरने के बा'द उन की शफ़ाअ़त के ह़क़दार हो जाइये और अपना मुंह बरोज़े क़ियामत नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दिखाने के क़ाबिल बना लीजिये या'नी यहूदो नसारा की सी शक्लो सूरत बनानी छोड़ दीजिये, अपने चेहरे पर एक मुठ्ठी दाढ़ी सजा लीजिये, इंग्रेज़ी बालों के बजाए ज़ुल्फ़ें रख लीजिये और नंगे सर घूमने के बजाए सब्ज़ इमामा शरीफ़ के ज़रीए़ अपना सर "सर सब्ज़" कर लीजिये। बस अपने ज़ाहिर व बात़िन पर म-दनी रंग चढ़ा लीजिये।

डर था कि इस्यां की सज़ा अब होगी या रोज़े जज़ा
दी उन की रह़मत ने सदा येह भी नहीं वोह भी नहीं

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिय्ये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن हमें समझाते हुए फ़रमाते हैं :

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा
याद उस की अपनी आ़दत कीजिये

काश ! हम पक्के आ़शिक़े रसूल बन जाएं

ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ के क़दमों की धूल के सदक़े काश ! हम भी सच्चे और पक्के **आ़शिक़े रसूल** बन जाएं। काश ! हमारा उठना बैठना, चलना फिरना, खाना पीना, सोना जागना, लेना देना, जीना मरना मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ हो जाए। ऐ काश !

फ़ना इतना तो हो जाऊं मैं तेरी ज़ाते आ़ली में
जो मुझ को देख ले उस को तेरा दीदार हो जाए

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने अन्दर इ़श्के़ ह़क़ीक़ी की शम्अ़ रोशन कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़ाहिर व बात़िन मुनव्वर हो जाएगा और दुन्या व आख़िरत में सुर्ख़रूई क़दम चूमेगी।

ख़्वार जहां में कभी हो नहीं सकती वोह क़ौम
इ़श्क़ हो जिस का जसूर [1], फ़क़्र हो जिस का ग़यूर

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिद्दीक़ी ह़ज़रात के अंगूठे में निशान !

ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की औलाद को "सिद्दीक़ी" बोलते हैं, इन के पाउं के अंगूठे में आज भी **सांप** के काटने का निशान नज़र आना मुम्किन है। मगर दिखाई न देने पर किसी सिद्दीक़ी साहि़ब की सिद्दीक़िय्यत पर **बद गुमानी** जाइज़ नहीं कि हर एक में येह अ़लामत वाज़ेह़ नहीं होती। सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ ने एक सिद्दीक़ी आ़लिम साहि़ब से "अंगूठे का निशान" दिखाने की दर-ख़्वास्त की तो कहा कि मेरे वालिद साहि़ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने खुरच कर ज़ाहिर किया था मगर अब फिर छुप गया है। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان "मिरआतुल मनाजीह़" जिल्द 8 सफ़ह़ा 359 पर फ़रमाते हैं : "बा'ज़ सालिह़ीन को फ़रमाते सुना

1 : बहादुर, जुरअत मन्द।

गया कि जो शैख़ सिद्दीक़ी (सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ के शहज़ादे जो कि सह़ाबी थे उन या'नी) ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا) की औलाद से हैं, उन्हें **सांप** या तो काटता नहीं अगर काटे तो (ज़ह्र) असर नहीं करता। (येह) उस लुआ़ब शरीफ़ का असर है (जो कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ के अंगूठे पर ग़ारे सौर में सांप के डसने की जगह लगाया था) और उन की औलाद के पाउं के अंगूठे में "सियाह तिल" होता है ह़त्ता कि अगर मां बाप दोनों की त़रफ़ से शैख़ सिद्दीक़ी हो तो दोनों पाउं के अंगूठे में **तिल** होगा। मैं ने बहुत (से) सिद्दीक़ी ह़ज़रात के पाउं के अंगूठे में येह तिल देखे हैं। ग़-रज़े कि येह अ़जीब मो'जिज़ात हैं।" (या'नी सिद्दीक़ियों को सांप का न काटना, काटे तो ज़ह्र का असर न करना और आज तक पाउं के अंगूठे में **तिल** का पाया जाना येह सब सरकारे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक लुआ़ब के मो'जिज़ात हैं)

ज़ईफ़ी में येह क़ुव्वत है ज़ईफ़ों [1] को क़वी कर दें
सहारा लें ज़ईफ़ो अक़्विया [2] सिद्दीक़े अक्बर का

(ज़ौक़े ना'त)

सिद्दीक़े अक्बर ने म-दनी ऑपरेशन फ़रमाया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने दिल में इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ जलाने और अपना सीना मह़ब्बते रसूल का मदीना बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कत से राहे सुन्नत पर चलने की सआ़दत और **फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर** رضی اللہ تعالٰی عنہ की ब-रकात नसीब होंगी। सुन्नतों की तरबिय्यत की

1 : कमज़ोरों 2 : क़वी की जम्अ़। ताक़त वर

ख़ाति़र हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र का मा'मूल बनाइये, म-दनी मर्कज़ के इनायत फ़रमूदा नेक बनने के नुस्ख़े "म-दनी इन्आ़मात" के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारिये नीज़ रोज़ाना रात कम अज़ कम 12 मिनट **फ़िक्रे मदीना** कीजिये और इस में म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर फ़रमा लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहानों में बेड़ा पार होगा। दा'वते इस्लामी को किस क़दर **फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर** رضی اللہ تعالیٰ عنہ ह़ासिल है इस का अन्दाज़ा इस **म-दनी बहार** से लगाइये चुनान्चे एक आ़शिक़े रसूल का बयान अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में पेश करने की कोशिश करता हूं : हमारा **म-दनी क़ाफ़िला** "नाका खारड़ी" (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये ह़ाज़िर हुवा था, म-दनी क़ाफ़िले के एक मुसाफ़िर के सर में चार छोटी छोटी गांठें हो गई थीं जिन के सबब उन को **आधा सीसी** (या'नी आधे सर) का दर्द हुवा करता था। जब दर्द उठता तो दर्द की त़रफ़ वाले चेहरे का ह़िस्सा सियाह पड़ जाता और वोह तक्लीफ़ के सबब इस क़दर तड़पते कि देखा न जाता। एक रात इसी त़रह़ वोह दर्द से तड़पने लगे, हम ने गोलियां खिला कर उन को सुला दिया। सुब्ह़ उठे तो हश्शाश बश्शाश थे। उन्हों ने बताया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझ पर करम हो गया, मेरे ख़्वाब में सरकारे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मअ़ चार यार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان करम बालाए करम फ़रमाया।

सरे बालीं उन्हें रह़मत की अदा लाई है

ह़ाल बिगड़ा है तो बीमार की बन आई है

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी जानिब इशारा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना **सिद्दीक़े अक्बर** رضی اللہ تعالٰی عنہ से फ़रमाया : "इस का दर्द ख़त्म कर दो ।" चुनान्चे यारे ग़ार व यारे मज़ार सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मेरा इस त़रह़ **म-दनी ऑपरेशन** किया कि मेरा सर खोल दिया और मेरे दिमाग़ में से चार काले दाने निकाले और फ़रमाया : "बेटा ! अब तुम्हें कुछ नहीं होगा ।" **म-दनी बहार** बयान करने वाले इस्लामी भाई का कहना है : वाक़ेई वोह इस्लामी भाई बिलकुल तन्दुरुस्त हो चुके थे । सफ़र से वापसी पर जब उन्हों ने दोबारा "चेकअप" करवाया तो डॉक्टर ने हैरान हो कर कहा : भाई ! कमाल है : तुम्हारे दिमाग़ के चारों दाने ग़ाइब हो चुके हैं ! इस पर उन्हों ने रो रो कर **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की ब-र-कत और ख़्वाब का तज़्किरा किया । डॉक्टर बहुत मु-तअस्सिर हुवा । उस अस्पताल के डॉक्टरों समेत वहां मौजूद 12 अफ़राद ने 12 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यतें लिखवाईं और बा'ज़ डॉक्टरों ने अपने चेहरे पर हाथों हाथ **सरवरे काएनात** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी या'नी **दाढ़ी मुबारक** सजाने की निय्यत की ।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो — लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो — है नबी की नज़र क़ाफ़िले वालों पर

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اِنْ شَآءَ اللّٰہ अपना बेड़ा पार है — हम को बू बक्रो उ़मर से प्यार है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **महब्बत** की उस ने मुझ से **महब्बत** की और जिस ने मुझ से **महब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा

(مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح ج١ ص٥٥ حديث ١٧٥)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"गेसू रखना नबिय्ये पाक की सुन्नत है" **के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से ज़ुल्फ़ों और सर के बालों वग़ैरा के 22 म-दनी फूल**

《1》 ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ुल्फ़ें कभी निस्फ़ (या'नी आधे) कान मुबारक तक तो 《2》 कभी कान मुबाक की लौ तक और 《3》 बा'ज़ अवक़ात बढ़ जातीं तो मुबारक शानों या'नी कन्धों को झूम झूम कर चूमने लगतीं (الشمائل المحمدية للترمذى ص٣٤، ٣٥، ١٨) 《4》 हमें चाहिये कि मौक़अ़ ब मौक़अ़ तीनों सुन्नतें अदा करें, या'नी कभी आधे कान तक तो कभी पूरे कान तक तो कभी कन्धों तक ज़ुल्फ़ें रखें 《5》 कन्धों को छूने की ह़द तक ज़ुल्फ़ें बढ़ाने वाली सुन्नत की अदाएगी ड़मूमन नफ़्स पर ज़ियादा शाक़ (या'नी भारी) होती है मगर ज़िन्दगी में एक आध बार तो हर एक को येह सुन्नत अदा कर ही लेनी चाहिये, अलबत्ता येह ख़याल रखना ज़रूरी है कि बाल कन्धों से नीचे न होने पाएं, पानी से अच्छी त़रह़ भीग जाने के बा'द ज़ुल्फ़ों की दराज़ी (या'नी लम्बाई) ख़ूब नुमायां हो जाती है लिहाज़ा जिन दिनों बढ़ाएं उन दिनों ग़ुस्ल के बा'द कंघी कर के ग़ौर से देख लिया करें कि बाल कहीं कन्धों से नीचे तो नहीं जा रहे 《6》 मेरे आक़ा **आ'ला**

ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : औ़रतों की त़रह़ कन्धों से नीचे बाल रखना मर्द के लिये **ह़राम** है (तस्हीलन फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 600) ﴾7﴿ **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मर्द को येह जाइज़ नहीं कि औ़रतों की त़रह़ बाल बढ़ाए, बा'ज़ सूफ़ी बनने वाले लम्बी लम्बी लटें बढ़ा लेते हैं जो उन के सीने पर सांप की त़रह़ लहराती हैं और बा'ज़ चोटियां गूंधते हैं या जूड़े (या'नी औ़रतों की त़रह़ बाल इकठ्ठे कर के गुद्दी की त़रफ़ गांठ) बना लेते हैं येह सब ना जाइज़ काम और ख़िलाफ़े शर-अ़ हैं। **तसव्वुफ़** बालों के बढ़ाने और रंगे हुए कपड़े पहनने का नाम नहीं बल्कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पूरी पैरवी करने और ख़्वाहिशाते नफ़्स को मिटाने का नाम है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 230) ﴾8﴿ औ़रत का सर मुंडवाना ह़राम है। (ख़ुलासा अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 664) ﴾9﴿ औ़रत को सर के बाल कटवाने जैसा कि इस ज़माने में नसरानी औ़रतों ने कटवाने शुरूअ़ कर दिये ना जाइज़ व गुनाह है और इस पर ला'नत आई। शोहर ने ऐसा करने को कहा जब भी येही हुक्म है कि औ़रत ऐसा करने में गुनहगार होगी क्यूं कि शरीअ़त की ना फ़रमानी करने में किसी का (या'नी मां बाप या शोहर वग़ैरा का) कहना नहीं माना जाएगा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 231) ﴾10﴿ बा'ज़ लोग सीधी या उलटी जानिब मांग निकालते हैं येह **सुन्नत** के ख़िलाफ़ है ﴾11﴿ **सुन्नत** येह है कि अगर सर पर बाल हों तो बीच में मांग निकाली जाए (ऐज़न) ﴾12﴿ (सरकारे मदीना (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से) बिग़ैर ह़ज कभी सर मुंडवाना **साबित** नहीं (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 690) ﴾13﴿ आज कल क़ैंची या मशीन के ज़रीए़ बालों को मख़्सूस त़र्ज़ पर काट कर

कहीं बड़े तो कहीं छोटे कर दिये जाते हैं, ऐसे बाल रखना **सुन्नत** नहीं 《14》 **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस के बाल हों वोह उन का **इकराम** करे।" (सु-नने अबू दावूद, जि. 4 स. 103, ह़दीस : 4163) या'नी उन को धोए, तेल लगाए और कंघा करे 《15》 ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने सब से पहले मेहमानों की **ज़ियाफ़त** की और सब से पहले **ख़तना** किया और सब से पहले **मूंछ** के बाल तराशे और सब से पहले **सफ़ेद बाल** देखा। अ़र्ज़ की : ऐ रब ! येह क्या है ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "ऐ इब्राहीम ! येह **वक़ार** है।" अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मेरा **वक़ार** ज़ियादा कर। (मुअत्ता, जि. 2, स. 415, ह़दीस : 1756) 《16》 **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 सफ़्ह़ा 224 पर है : मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत बुन्याद है : "जो शख़्स क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) सफ़ेद बाल उखाड़ेगा क़ियामत के दिन वोह **नेज़ा** हो जाएगा जिस से उस को भोंका जाएगा।" (كَنْزُالْعُمّال ج ٦ ص ٢٨١ رقم ١٧٢٧٦) 《17》 बुच्ची (या'नी वोह चन्द बाल जो नीचे के होंट और ठोड़ी के बीच में होते हैं उस) के अग़ल बग़ल (या'नी आस पास) के बाल मुंडाना या उखेड़ना बिदअ़त है। (फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 5, स. 358) 《18》 गरदन के बाल मूंडना मक्रूह है। (ऐज़न, स. 357) या'नी जब सर के बाल न मुंडाएं सिर्फ़ गरदन ही के मुंडाएं जैसा कि बहुत से लोग ख़त़ बनवाने में गरदन के बाल भी मुंडाते हैं और अगर पूरे सर के बाल मुंडा दिये तो इस के साथ गरदन के बाल भी मुंडा दिये जाएं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 230) 《19》 चार चीज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ हुक्म येह है कि दफ़्न कर दी

जाएं, बाल, नाखु़न, है़ज़ का लत्ता (या'नी वोह कपड़ा जिस से औ़रत है़ज़ का ख़ून साफ़ करे), ख़ून। (ऐज़न, स. 231, आ़लमगीरी, जि. 5, स. 358) ﴾20﴿ मर्द को दाढ़ी या सर के सफे़द बालों को सुर्ख़ या ज़र्द रंग कर देना मुस्तह़ब है, इस के लिये महंदी लगाई जा सकती है ﴾21﴿ दाढ़ी या सर में महंदी लगा कर सोना नहीं चाहिये। एक ह़कीम के ब क़ौल इस त़रह़ महंदी लगा कर सो जाने से सर वग़ैरा की गर्मी आंखों में उतर आती है जो बीनाई के लिये मुज़िर या'नी नुक़्सान देह है। ह़कीम की बात की तौसीक़ यूं हुई कि एक बार सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ के पास एक नाबीना शख़्स आया और उस ने बताया कि मैं पैदाइशी अन्धा नहीं हूं, अफ़्सोस कि सर में महंदी लगा कर सो गया जब बेदार हुवा तो मेरी आंखों का नूर जा चुका था! ﴾22﴿ महंदी लगाने वाले की मूंछ, निचले होंट और दाढ़ी के ख़त़ के कनारे के बालों की सफे़दी चन्द ही दिनों में ज़ाहिर होने लगती है जो कि देखने में भली मा'लूम नहीं होती लिहाज़ा अगर बार बार सारी दाढ़ी नहीं भी रंग सकते तो कोशिश कर के हर चार दिन के बा'द कम अज़ कम इन जगहों पर जहां जहां सफे़दी नज़र आती हो थोड़ी थोड़ी महंदी लगा लेनी चाहिये।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 और (2) 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो — सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो — ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मन्क़बते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ

हक़ीक़ी आ़शिके़ ख़ैरुल वरा सिद्दीके़ अक्बर हैं
यक़ीनन मम्बए़ ख़ौफे़ ख़ुदा सिद्दीके़ अक्बर हैं

यक़ीनन मख़्ज़ने सिदक़ो वफ़ा सिद्दीके़ अक्बर हैं
बिला शक पैकरे सब्रो रिज़ा सिद्दीके़ अक्बर हैं

तक़ी हैं बल्कि शाहे अत्क़िया सिद्दीके़ अक्बर हैं
निहायत मुत्तक़ी व पारसा सिद्दीके़ अक्बर हैं

वोही यारे मज़ारे मुस्त़फ़ा सिद्दीके़ अक्बर हैं
जो यारे ग़ारे मह़बूबे ख़ुदा सिद्दीके़ अक्बर हैं

ग़रीबों बे कसों का आसरा सिद्दीके़ अक्बर हैं
त़बीबे हर मरीज़े ला दवा सिद्दीके़ अक्बर हैं

नबी ने जन्नती जिन को कहा सिद्दीके़ अक्बर हैं
अमीरुल मुअमिनीं हैं आप इमामुल मुस्लिमीं हैं आप

रफ़ीके़ सरवरे अर्ज़ो समा सिद्दीके़ अक्बर हैं
सभी अस्ह़ाब से बढ़ कर मुक़र्रब ज़ात है उन की

यक़ीनन पेशवाए मुर्तज़ा सिद्दीके़ अक्बर हैं
उ़मर से भी वोह अफ़्ज़ल हैं वोह उ़स्मां से भी आ'ला है

इमामे शाफ़ेई के पेशवा सिद्दीके़ अक्बर हैं
इमामे अह़मदो मालिक, इमामे बू ह़नीफ़ा और

हमारे ग़ौस के भी पेशवा सिद्दीके़ अक्बर हैं
तमामी औलियाउल्लाह के सरदार हैं जो उस

बिला शक पेशवाए अस्फ़िया सिद्दीके़ अक्बर हैं
सभी उ़-लमाए उम्मत के इमामो पेशवा हैं आप

फ़ुज़ूं तर बा'द अज़ कुल अम्बिया सिद्दीके़ अक्बर हैं
ख़ुदाए पाक की रह़मत से इन्सानों में हर इक से

क्यूं डूबे अपना बेड़ा नाख़ुदा सिद्दीके़ अक्बर हैं
हलाकत ख़ैज़ त़ुग़्यानी हो या हों मौजें तूफ़ानी

नबी का है करम और रहनुमा सिद्दीके़ अक्बर हैं
भटक सकते नहीं हम अपनी मन्ज़िल ठोकरों में है

त़बीब अब बस मेरे तो आप या सिद्दीके़ अक्बर हैं
गुनाहों के मरज़ ने नीम जां है कर दिया मुझ को

मुहि़ब्बे शाफ़ेए रोज़े जज़ा सिद्दीके़ अक्बर हैं
न घबराओ गुनहगारो तुम्हारे ह़श्र में ह़ामी

न डर अ़त्तार आफ़त से, ख़ुदा की ख़ास रह़मत से
नबी वाली तेरे, मुश्किल कुशा सिद्दीके़ अक्बर हैं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह्रीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात को मिरज़ा पूर त्री कोनिया बग़ीचे के पास फ़ैज़ाने मदीना में इशा की नमाज़ के बा'द होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है, आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा, हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अपनी इस्लाह़ के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना® की शाख़ें

19-20 मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ओफ़िस के सामने, मुंबई-3 फ़ोन:(022) 23454429

421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, देहली-6 फ़ोन: (011) 2328 4560

19-216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, अजमेर 0145-2629385

नागपूर : गरीब नवाज मस्जिद के सामने,सेफी नगर रोड,मोमिन पुरा, (M) 09373110621

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Ph:91-79-25391168 E-mail : maktabahind@gmail.com www.dawateislami.net